॥ श्री सद्गुरु प्रसन्न ॥

ॐ

लहरी समाज कल्याण
भजनावली

(हिंदी भजन)

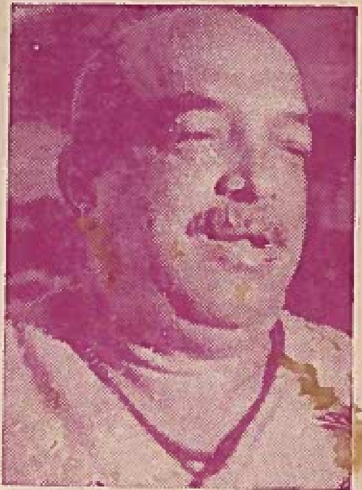

० लेखक ०

श्री संत जैरामदास महाराज

प्रकाशक :
संत जैरामदास

प्रबंधक :
लहरीबाबा आश्रम, कामठा
त. गोंदिया, जिला-भंडारा.

प्रथम आवृत्ति : १०००
द्वितीय आवृत्ति २०००
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

पुस्तकें मिलने का स्थान :
लहरी आश्रम, कामठा
पो. कामठा, त. गोंदिया, जि. भंडारा

मुद्रक :
शिवशक्ति प्रेस प्रा. लि.
ग्रेट नाग रोड, नागपुर-९
फोन : ४२२६६

॥ श्री सदगुरु ॥

卐 संदेश 卐

प्यारे भाईयो !

आज समय के साथ मनुष्य ने जीवन के मूल्य और उसके मानदंडको भी बदल दिया है। विज्ञान का उन्नति से मनुष्य जहाँ भौतिकता की ओर अधिक प्रवृत्त हो गया है, वही पाश्चात्य सभ्यता और फॅशन के वशीभूत होकर वह अपने देशकी संस्कृति और उसकें चेतन विज्ञान अध्यात्म ज्ञान को भुला बैठा है। शास्त्रो और पौराणिक ग्रथों को असत्य कहा जा रहा है और इसी आधारपर उसमें निहीत जीवन आदर्शों को ठुकराया जा रहा हैं ईश्वरीय शक्ति को काल्पनिक और अंधश्रद्धा कहकर मनुष्य अपने स्वार्थ और वासना के लिए अपने नए मानदंड बना रहा है कर्म की परिभाषा बदलकर उसे मात्र उदर भरण तक ही सीमित कर दिया गया है। मनुष्य अपने अपने मार्ग और प्रयत्नोंसे फिर वे अच्छे हों या बुरें उसे प्राप्त करनेमें जुट गया है संक्षेप मे मनुष्य आज मानव जीवन के आदर्श को, मानवता को भूलकर अपने स्वयं मात्र में केन्द्रित हो गया है। इससे जहाँ छल, कपट, अहकार, घृणा, ईर्षा, लोभ, वासना आदी दुष्टवृत्तियोंका विस्तार हो रहा हैं वहीं, सत्य, अहिंसा, दया क्षमा, शांति आदि माननीय गुणोंका ह्रास हो रहा है परंतु मेरे भाईयो, जो सत्य है वह सदैव ही सत्य बना रहेगा ईश्वर की सत्ता मे कोई विश्वास रखे या ने रखे वह तो बनी रहेगी ही, जिन योगी मुनियों ने उसे जाना है, उन्होंने उसे माना है स्वयं ईश्वर को नही जान पाए इसलिये उसकी सत्ता को झूट कहना वैसे ही हास्यापद है जैसे स्वयं चन्द्रमा पर न जा सकने के कारण यह कहना कि मनुष्य चंद्रमा पर गया ही न था।

सज्जनो जिसने देखा उसने लिखा, फिर भी भौतिक और अध्यात्मिक ज्ञान में बहुत भारी अंतर है वह जड वस्तुओंका विज्ञान है।

इस लिये इस जड देह के अवयवों (आखों) से देखा परखा जा सकता किन्तु यह चेतन विज्ञान है इसलिए केवल देखने का नहीं अनुभव करनेकी और अपनी आत्मा से शरीरसे–नही परखने की वस्तु है। यह शक्ति अखंड अनंत और असीम है इसीलिए स्वार्थ तत्वोंसे परे है। यह घूम घूमकर लोगोंको दिखाने की वस्तु नही है. स्वयं अनुभव करने की वस्तु है इसलिए जिसने पाया उसने छिपाया भोंदू ने बेंज बेचकर खाया। यह ऐंसा ज्ञान है जो न खरीदा जा सकता है न बेचा जा सकता है इसकी प्राप्ती की जा सकती है जिसके लिए हमे स्वयं को प्रयत्न करना पडता है।

अपने भजनों में इसी सत्य और असत्य की मैंने चर्चा की है। मनुष्य जन्म पा लेने मात्रसे ही उसे मनुष्य नही कहा जा सकता। यदि उसम दया, क्षमा, शांति आदि मानवीय गुणो का अभाव है तो उसमे और पशु मे विशेष अन्तर नही माना जा सकता यदि मनुष्य अपने ज्ञानका केवल उदर भरण तक ही सीमित रखता है तो वह तो पशु समान ही है क्योंकि पशु मनुष्यके जैसा मस्तिष्क न रहने पर भी वह सबकुछ कर लेता है।

मनुष्य का जन्म और मृत्यु पर कुछ भी अधिकार नही। फिर भी जन्म होते रहते हैं। मृत्यू होती रहती है–यही ईश्वर की सत्ताका सबसे बडा प्रमाण है और हमने भी जन्म लिया है तो एक दिन हमे भी यह देह, धन, दौलत परिवार कुटूंब सबकुछ छोडकर जाना पडेगा। संसार की काई भी शक्ति तब यह न रोक सकेगी इसलिए भाईयों सच्चे अर्थ में मनुष्य का जीवन बिताओ और सत्य कर्म करो क्योंकि ये कर्म ही अंत समय के सच्चे साथी हैं।

आपका

जैरामदास

लहरी समाज कल्याण

卐 भजनावली 卐

: अनुक्रमणिका :

भजन क्र.	पृष्ठ
हम लटके हैं राम भजन के	१
हम घरवासी संन्यासी	२
संत के बीना सूना जीवन	२
पाया हीरा ही पाये हीरा	३
है नही के देख तु बीच में	४
संत इशारे हो संत इशारे	५
अरे मन निर्भय पद पहिचान	६
मर्यादा जो निभाता है	६
काया तेरी है एक ब्रम्हमाया	७
पानी दुध भाव में बिक जाय	८
दिखाइयों रें तोरी मोहेरे	९
कोडी कौडी धन जोडके	९
हृदय से परिवर्तन दया धरमसे	१०
दु:खियों के हितकारी है	११
झिल मिल आखों में	११
उल्टे नजर से देखले	१२
भजन बिना जीवन है	१३
सखीरी पिया गांव	१३
दिन बिये रात आई	१४
न्याय रोवे गुंडे बजरिया	१५
कई लोग पढते है रामायण में	१५
हुआ मस्त आशिक फकीर	१६
बडे हलकट पाजी गधे	१७
महत्व रखते अपने कामका	१७

भजन क्र.	पृष्ठ
छुटा बाण वापस ना आवे	१८
दिल में नही शांती जिसके	१९
मेरो मन बावरो	१९
मेरो विरज एक सांवरियां	२०
तुम भटको मन्दीर मस्जिद	२१
सजा रहे मेरा प्यारा देश	२२
जिसके दिल में नीति होती	२३
फकीरी लगती मुझको प्यारी	२३
कान की सुनी आंख की देखी	२४
ये अध श्रद्धा में भोली भाली	२५
अरे भविष्य जिसका उजला नही	२५
सन्तो का ये धरम नही	२६
जो तुम्हे मांगु प्रभुजी	२८
राम भजन को नरतन पाया	२९
कोई किसी का शत्रु नही है	२०
कई लोग बताते चतुराई	२८
तेरी लीला बे मिसाल	२८
मेरे दुर्बुद्धी के भाव	३२
पवन बरसत फोडी	३३
परमात्मा के सब आत्मा	३८
गुरु नाम का हमने ध्यान	३१
संसार सभी दु:ख दायी	३७
रंग जारे तू रसना	३४
ललचाये ये रसना	३४

ऊँचा रहे मेरा सरताज ३६
समय का ज्ञान नही ३७
हाय हाय ये मजबुर ३८
जय जय वीर जवानो ३८
गुरु कृपा जिस पर होती है ३९
गुरु कृपा कही खरेदी ४०
बल पर नाम के हम ४०
किसको तुने अजमाया ४१
मिलना मिलाना सिखो ४२
मरना मिटना खेल हमारा ४२
राम नाम बिन व्यर्थ ४३
विश्वास देकर किसी ४४
प्रभु मेरे नयनो मे ४५
प्रभु तेरो खेल है ४६
प्रभु तैने मोरी सुध ४६
प्रभू तुम जाकर कहां बसे ४७
अरे भाई मैं तो राम दिवाना ४८
जलवा तेरा ये सब में ४९
अग्यान में उमर खोया ४९
बोल बोल नंदलाला ५०
सम्भल के चल प्यारे ५१
तेरे दीदार खातिर ५२
करो व्यवहार आदमी ५२
सज्जन दिल खोल करके ५३
राज्य सभा में न्याय ५४
सतो को सत सगत ५१
करे बढाई कलीयुग को ५६
दिन ढले ढले चली उमरिया ५७
हे जगतारण, विघ्न निवारण ५७
संतो के पास हे दया, दुष्टी के ५८
तरसे अखियां राम मिलन ५९
श्याम देखत श्याम देखत ५९
छोड तू झूठी प्रीति रे बाबा ६०
राम नाम दे जिसको दिलासा ६०
नाम रतन अविनासी रे बाबा ६१
मूर्ख क्यों करता हे जलन ६१
प्रीतम से जब प्रीत जुडे ६२
मिले न भक्ति तन को भूले ६२
हे भगवान करुना सागर ६३
सीधे सरल स्वभाव वाले ६४
तू बलवे को रे भूल करके ६४
हे शारदे वादे निभा दे ६५
हे रूप के नुरपती ६६
बाबा अपनी आंखे खोल जरा ६६
दास की विनती सुनलो! हे गुरु ६७
कही मानो भारत वासीन्दों ६८
भोर भई प्रभू, गुण ना गाये ६९
मन वारे करत रहो, भजन ६९
हमे क्या दुनियासें नाता ७०
मन में शका कुशका ७०
दुर्जन से करो बंधन ७१
फूट होवे जिसके घर में ७२
झुकेंगे ना अन्याय से चाहे ७२
सत्य अहिसा, आग्रीने ७३
जहां चलती है पक्षपाती ७४
नैनों से बहती है अश्रुधार ७५
आरती ७६

भजन क्र. (१)

(नोट-जैराम बाबा के दैनिक विचार)

हम लटके हैं, रामभजन के, उसमें हमारी भलाई है।
नही किसी से लेना देना, उमरिया सारी बितानी है ।।टेक।।

हित हमारा, निजधन में ही, चित्त हमारा बसे वही,
काम काज में मन ना लागे, फिर कर जावे बुद्धि वही।
तरसें अखियां सत संगत को, दिल की प्यास बुझानी है ।।१।।

आस नहीं है, धन दौलत की, परवा नहीं है जडतन की
मैंने देखा इसमें धोखा, हानि होगी जीवन की,
भाग्य हमारे पूर्व जन्म के, संत चरण मिल पाई है ।।२।।

दीन दुःखियों की सेवा करनी, पीर पराई नित हरनी
अवसर सुन्दर मिला मुझको, निष्काम करना ओ करनी
में बदला किसी से ना लूंगा, यही दिल में ठानी है ।।३।।

जैराम है ये दिल का दिवाना, आत्मिक प्रेम सबको देना
गन्दे विचारों को दूर हटाकर, हृदय परिवर्तन कर देना
नास्तिकों को आस्तिक बनाकर, धर्म कर्म सिखाना है ।।४।।

भजन २ (चाल : जैरामाशी काय वर्णावे)

हम घरवासी सन्यासी, गृहस्थी में रहकर करें भक्ति हो ।।टेक।।
काम में देखते राम,
उसमें लेते विश्राम,
इसमें ही मजा हमें आती हो ।। १ ।।

शिस्त से चलाये प्रपंच,
कहीं भी ना पड़े कम तर्त,
रखकर शुद्ध भाव वृत्ती हो ।। २ ।।

करे मदत समय समय पर,
पड़े मुसीबत किसी भाई पर,
तन मन की करे आहुती हो ।। ३ ।।

दृढ़ निश्चय संकल्प हमारा,
देश धर्म समाज का नारा,
संस्कृति हमारी भारती हो ।। ४ ।।

जैराम कहे प्रेरणा हमें,
मिलती संतसंगत में,
ज्ञानेश्वरी गीता बतलाती हो ।। ५ ।।

भजन ३ (चाल : भजन बिन नींद न आये)

सत के विना सूना जीवन संसार,
श्रद्धाभाव दया और शान्ति मानव का सिंगार ।।टेक।।
शोभा भक्ति की राम नाम ये लेवे बारम्बार ।
वाचा मनसा कर्मणा से, तत्व का मिले सार ।

अन्तर रंगमें रंगे जो प्राणी तन को गया बिसार ॥१॥

झरने नाले मिले नदी को, मिलन से बनी दरियाँ :
चित्त बुद्धि मन स्थिर होवें, आत्मज्ञान मिलिया ।
निवृत्ति निरझर उठ तरंग, सुमन खिले बहार ॥२॥

स्थुल सूक्ष्म एक ही ब्रह्म, सगुण निर्गुण सार ।
जीव भ्रम मिटे तब, शिव प्रकाश अधिकार ।
हंसा बनकर दूध पिये, छोड़ा पानी यार ॥३॥

जैराम कहे कल्प विकल्प, मन की कमजोरी ।
कर्म अकर्म बाधा डाले, जीव फिरे फेरी ।
रूप स्वरूप ये खेल जगत का, अगोचर दृष्टि निहार ॥४॥

भजन ४ (चाल : सोईजा तारा हो सोईजा तारा)

पाया हो, पाया हीरा ।
सत संगत में, उनके ही रंग में ॥
अपना आप पाया, स्वरूप सितारा ॥टेक॥ पाया....

कचरे में गुमा ये मानिक, कई दिन ये बीते ।
ढूंढ़ते ढूंढ़ते थक गया था, किस्मत हुये जगते ।
गुरुकृपा का, अन्जन लगाया, निज धाम पाया
प्रीतम प्यारा ॥१॥

चित्त चिन्तामनि पारसमिला, रही ना किसीकी आस ।
मालिक मेरे प्रभुजी हैं, मैं उनका हूँ दास ।
चरण बलिहारी, दुःख निवारी ।
मुकुंद मुरारी प्राणों का प्यारा ॥२॥

वो हैं मेरे चाँद और, मैं उनका हूँ चकोर
उनके बिना, रह ना पाऊं, डगमग फिरे नजर
जल बिन मछलियाँ, तडपे दिन रतियाँ
वैसा ही मेरा जीवन ये सारा ॥३॥

प्रभु मेरा पतिदेव है, मैं उनकी जाया
उस छाया के आधीन होकर नवजीवन पाया
कोई ना भावे स्वर्गसुख देवे, हरी भजन ही, लगता प्यारा ॥४॥

घायल की गति घायल जाने,दूजा न जाने कोय
जिसके ऊपर बीती ये बातें समझ वोही पाये
जैराम का अनुभव, सतसंग मिले,साथ पकड़ ले टूटे भवफेरा ॥५॥

भजन ५ (चाल : सबके रहते लगता है ऐसे)

है नहीं के, देख तू बीच में, भाग्य तेरे खुले
अनुभव मिले, तेरा तुझे, पूरे कर तू वादे ॥ टेक ॥

पकड सके ना हाथों से कोई,आँखों से ना दिखाये
जो देखे वो मर्म पावे, उन तत्वों में मिल जावे,
स्वाद लेवे रसना उसकी, पूरे होवे वादें ॥१॥

गुप्त खजाना निजधन, उल्टी नजर देखना
अन्तर मुख से भजन कर ले, पद मिले निर्वाना
सोहम् सोहम्, हंसा उल्टे, अखंड शांति मिले ॥२॥

परख बिन नर ये कंगाल, झूठी बजावे गाल
समझा नहीं आतम ताल, किया जीवन बेहाल
गर्भवती जाने पीडा को, दु:ख ये दर्दीले ॥३॥

श्रद्धाभाव तू जमा ले, किल्ली गुरु से ले ले
आत्म निवेदन चिंतन कर ले,सहज ताला खोले
ज्योति प्रकाश दिखे उजाला,अपना आप निरख ले ॥४॥

जैराम कहे भ्रम मिटे बिन, भेद मिला ना किसे
जिसने पाया, उसने छुपाया, क्या जाने मूढ उसे
परम पद की, ये है बेली, अवसर ऐसा न मिले ॥५॥

भजन ६ (चाल : सोईजा तारा हो सोईजा तारा . . .)

संत इशारे हो संत इशारे
सबसे है न्यारे, अमर ये घरे
विश्व व्यापक परे, स्वरूप सितारे ॥टेक॥

ज्योतिष शास्त्र, गणित आधार, भविष्य बतलावे
सिद्धि साध उपाधि लादी, काम ना वो आवे
बानी सिद्ध होवे,बांझ पुत्र देवे,सच्चा नही ज्ञान वादें अधूरे ॥१॥

सहस्र दल में अखंड समाधि, छुटे उपाधी
सहजा सहज, रमे निरन्तर,रहनी ये साधी
अटल ये बानी, परखे संत मुनी, चाहे ढले चंद्र सूरज तारे ॥२॥

आगम निगम है खेल इनका, ब्रह्म बानी बोल
शेष शारदा मौन हुये है, चले ना उनका बल
बिरले ने पाया, भेद का मर्म, कौन बखाने, सब है अधूरे ॥३॥

है ये कोमल मख्खन से भी वज्र से है ये कठोर
चाहे कोई प्राण हरे भी वचन न देवे मोड
मूढमती से, जैराम बखाने, अगोचर दृष्टि अलक्ष निहारे ॥४॥

भजन ७ (चाल : साई तेरा बना रहे दरबार)

अरे मन निर्भय पद पहिचान
मिले आनन्द को स्थान ॥ टेक ॥
स्वरूप सुख के सागर पावे
धर निज पद का ध्यान ॥ १ ॥
व्याघ्राम्बर अधरासन डाले
मिटे काम निशान ॥ २ ॥
संत मुनी का यही है बाना
आगम निगम का गावे गान ॥ ३ ॥
आवागमन न मिटे पल में
कहे जैराम धर निर्गुण ध्यान ॥४॥

भजन ८ (चाल : जैरामाशी काय वर्णावे)

मर्यादा जो, निभाता है
जगत में प्यारा होता है ॥टेक॥
आज्ञा पुरखों की पालन करता
पुत्र नाता छोटे से निभाता
नीच ऊँच की भावना न रखता है ॥१॥
सम दृष्टि, सभी जीवों पर
किसी से ना रखे वो बैर
पर दुःख अपना जाना है ॥२॥
रखे चिढ, झूठे कामों से
दुर्गुणी और पाखण्डों की
अन्याय से घृणा वो रखता है ॥३॥

अथाह सागर, जैसा भरा है
नदी झरने जिसको मिलते हैं
ऐसा स्थिर दिल हुआ है ।।४।।

सत्य अहिंसा, करुणा बाना
परम धर्म, भूषण माना
कहता जैराम क्या लेना देना है ।।५।।

भजन ९ (चाल : जिया ले गयो जी मेरा सांवरियां)

काया तेरी है एक ब्रह्म माया
तू देख देख सब भूल गया ।। टेक ।।

सोच भैय्या ऽ ऽ ऽ ऽ बिजली रोशनियां
दाबत बटन, अंधियारा छाया
ऐसा प्रभुने, खेल रचाया
वो ही सब में समाया ।। १ ।।

भिन्नभिन्न ये रूप नजारे,
अलग अलग ये नाम है धरे,
आप अगम, निगम परे,
सगूण निर्गूण खिलाडियां ।। २ ।।

एक नदी के दो हैं किनारे
कभी नहीं ये मिलने वाले
भेद ऐसा, जड चेतन में
पत्थर लोहा चिन्गारियां ।। ३ ।।

जैराम कहे, गागर में सागर

परखत होवे, नर नारायण
प्रीतम प्यारा, देख स्वरूप में
मिटे सारी भ्रांतियां ।।४।।

भजन १० (चाल : जिया ले गयो जी मोरा सावरियां . . .)

पानी दूधभाव में बिक जाये
सत संगत के वो गुण पाये ।। टेक ।।

दुर्गुण मिटा ऽ ऽ ऽ ऽ समरस बन गया
लीन नम्रता, में बट गया
भेद मिटा ऽ ऽ ऽ अभेद भया ऽ ऽ
मिलना मिलाना सिख पाये ।।१।।

जल के ऊपर लकडा तैरे,
सभी प्राणी को पार उतारे,
नाम की महिमा,जड जीव कामा
भव सागर से पार करे ।।२।।

संत के संगत में गणिका तर गयी
वेश्या वृत्ति क्षण में बदल गई
लेके नाम ऽ ऽ ऽ अजामिल ने
परम पद को वो पाये ।।३।।

कहें जैराम, मैं ही विगडा
माया का सब तोड के झगडा
संत संग मैंने पकडा
चढ गया भक्ति का रंग ये ।।४।।

भजन ११ (चाल : सूनी रे नगरियाँ, सूनी रे डगरिया)

दिखाईयो रे तोरी, मोहे रे डगरियाँ ऽ ऽ
हाथ जोड तोहे, पडू रे मैं पैय्यां ।।टेक।।

दिखाईयो रे तोरी हो --- राम
अनजाना राही हूँ मैं, राहें नहीं जानूं
पग पग पर देखूं मैं, दुःख ही ठाढ़ा ।।१।।

दर दर की ठोकरें खाऊं, साथी नही मेरो
धैर्य ये खिसक रहा है, सहा नहीं जाये
बढ़ा दे रे बैय्या, राधा के रमैया ।।२।।

सूचे नाही काम नाम, क्रोध ज्वाला भडके
हरदम जिया धडके, शोक व्याकुल होके
आ जा प्राण पिया, डूबते का खिवैया ।।३।।

निंदिया न आये मोहे, जागे मोरी अंखियां
एक एक पल जाये, अन्जली के बुन्दियां
कहाँ ढूंढू तोहे मैं, जैराम मूढ मतिया ।।४।।

(नोट–भविष्य वाणी)

भजन १२ (चाल : रामचन्द्र कह गये सिया से . . .)

कौड़ी कौड़ी धन जोड के रखा, एक दिन छीना जायेगा
गरीबों का ये खून पसीना, एक दिन रंग दिखायेगा ।।टेक।।

वे वे दिन अब दूर नहीं हैं, सन्मुख तुम्हारे हैं खड़े २
देर लगती है बनने बनाने, छोड़ो तुम झूठो चालें २
सब मिल कर जो बांट खायेगा, सतयुगी कहलायेगा ।।१।

रखकर लालच भरी आशाएँ, रखेगा जो स्वार्थ भाव
उसका तो अब पतन होयेगा, कहीं ना मिलेगा उसको बचाव
ईश्वर शक्ति खेल जगत का जानेगा सुख पायेगा ॥२॥

असुरी वृत्ति जब बढती है, कही शांति ना मिलती है,
इनका दमन करने के लिए दैविक शक्ति जगती है,
सच्ची आत्मा प्रगट होकर, मानवता को बचायेगा ॥३॥

घुसखोरी और कालाबाजार, राक्षस कुचला जायगा
नवयुग का निर्माण होयेगा, राम राज्य कहलायेगा
मानव मानव से प्रेम करेगा, ईमान से जीवन बितायेगा ॥४॥

जागो यारों अज्ञानता से प्रेम करो भलाई से
जिसमें होवे अपना भला, चलो उन्हीं राहों से
जैराम कहे वो ही नर, नया जमाना देखेगा ॥५॥

भजन १३ (चाल : रामचंद्र कह गये सिया से . . .)

हृदय परिवर्तन, दया धरम से, होवे सत, युग का निर्माण
दमन होवेगी असुरी वृत्ति, होगा मानव का कल्याण ॥टेक॥

दैविक शक्ति प्रेरणा से, आयेगी हरियाली जीवन में
ज्ञान की किरणें प्रकाश देवें, शांति मिलेगी हर घर में
बन्धुभाव का नाता जुड़ेगा, धर्म बनेगा वो बलवान ॥१॥

फूट की दीवारें टूट पडेगी, सत्य अहिंसा क्रांती से
बहती रहेगी प्रेम की दरियां, आत्मा आत्मा के मिलने से
खिल उठेगी मुरझाई कलियाँ, महकायें सारा उपवन ॥२॥

गूंज उठेगी आनन्द की लहरें मंडरायेंगे मन के भौंरे

ब्रह्म बोध का रस चूसेंगे, स्वाति चंद्र चकोरे,
अमीर गरीब सब मिल जुल के, होयेगा सबका संघटन ॥३॥

कहता जैराम स्व कर्म से, स्वाधीनता को टिकायेंगे,
अभिमान का त्याग करेंगे, स्वाभिमान से जियेंगे,
ये ही संस्कृति भारती कहती, जागो बालक वीर जवान ॥४॥

भजन १४ (चाल : ये कैसा सुर मन्दिर है ....)

दुःखियों के हितकारी हैं, वो दीन दयालु प्रभू
दौडे आते संकट पर वो, ब्रीद सम्भाले प्रभू ॥टेक॥

बिना श्रद्धाभाव, किसीको ना मिले कभी
दया करुणा, की आहें, समझी ना जिसने कभी
ये पथ, जटिल है बडा, आये ना कभी भूल ॥१॥

दिलवर दिल है जिसका, उसने ही मजा चखा
इन्द्रियोंपर काबू रखा, मर्म उसने ही परखा
मन पर, संयम करे जो नर, जीता वोही बाजू ॥२॥

तन खोया, धन खोया, अहंकार सब मिट गया
बचा नाम ही साथी, जुडी प्रीतम से वो प्रीती
स्थिर चित्त जब होवे, प्रभू हुये काबू ॥३॥

जैराम कहे ये, अनुभव अपना आप लेते जाओ
बिना मरे स्वर्ग ना दिखे,मरना जीना सीख पाओ
मार्ग ये है अटपटा, गुरु बिन मिले ना कबहूँ ॥४॥

१५ भजन (चाल : ये कैसा सुर मन्दिर है ....)

झिल मिल आंखों में, दीख पाये, अजब तेरा जलवा

राग, ये सुना रहा है, कानों में ये पावा ॥ टेक ॥

तेरे रंग में, दंग हुआ, चढ़ा रंग ये नया
कोई चीज मुझे ना भाये, तू ही मुझको भाया
लाज शरम सब छूट गयी, जिगर दिवाना हुआ ऽ ऽ ॥१॥

हिला रहा है, घण्टी, नाभी के उपर सर सर के
आवाज देवे दो लब्जे, सोहम् सोहम् करके
तू ही तू, हर ठिकाने, कोई न दिखे नया ऽ ऽ ॥२॥

जैराम का, तू ही दिदार, बैठा तू मेरे अन्दर
दिल का परदा खोला हूँ मैं, तू ही मेरा सिंगार
जनम जनम की प्रीत जुड़ी, गुरु ने दी दुआ ॥३॥

भजन १६ (चाल: मिलती है जिन्दगी में मोहब्बत . . .)

उल्टे नजर से देख ले, जलवा कैसा दिखाये
नयना ये थम जाये, अजब छबी दिखाये ॥टेक॥

ठिकाना जन मन का, सुध ना रहे इस तन की
बरखे लहरे लहर की, फुलवारी फुले ज्ञान की
उड़े फीवारें दिल के, परमानंद समायें ॥१॥

जहाँ रात ना और दिन है, जहाँ तेल ना और बाती
चन्द्र सूरज फीके हैं, जलती अखण्ड ज्योती
छन छन दश दिशा में, नाद कानों में आये ॥२॥

सूरत है ना मूरत है, पता ना गांव नाम का
दृश्य अदृश्य नहीं है, दृष्टा बना वहाँ का
आप ही बोलें और गाये, खुशियां वहां मनायें ॥३॥

कहता है जैरामदास, लगे जब निज ध्यास
सहजा सहज प्रकाश, मिटे माया की आस
छूटी सभी झंझटें, चिन्मय स्वरूप को पाये ॥४॥

भजन १७ (चाल : 'ब' भजन बिना चैन ना आये राम)

भजन बिना ऽऽ जीवन है बेकार
भाव भक्ति में मन ये डोले, जीव ये खेले बहार ॥टेक॥

भजन पूजन में चित्त रमजावे, बुद्धि स्थिर होंवे
ज्ञान विवेक, देवे दिलासा, अखंड शांति पावे,
वैराग्य के इस बाजार में, दुनियां बिकी यार ॥१॥

अपना अनुभव आप करो तुम, देखो स्वप्नों में आप
जो जो देखें खुद ही खूद तू, दूजा नहीं कहीं भूप
दृश्य जगत में स्वप्नों की माया, यह सब है असार ॥२॥

स्थूल सूक्ष्म कारण से न्यारा, स्वरूप हैं बिराना
नयन खोलकर, अनुभव कर ले, पद मिले निर्वाना
जैराम दास कहे रे बाबा, अगोचर दृष्टि निहार ॥३॥

भजन १८ (चाल : सखी री सुन बोले पपीहा . . .)

सखी री पिया गांव, है बहु दूर
चलत चलत थक गये पैय्या
हो गयी में मजबूर ॥टेक॥

तन की सुध बुध, सब खो गयी, धडकन लागे जिया
सुनकर जादू भरी बंसरी, नैनों से बरसे नीर ॥१॥

जटिल मार्ग हैं मुश्किल चढना, फिसले पाव थमेना
कहीं पर बिजली, कहीं पर तारे,
होवे झन झन कार ॥२॥

कोयल पपीहा, पिऊ पिऊ बोले, डाल डाल पर उछले
शेर सिंह दहाड मारे,
चहूं ओर होवे शोर ॥३॥

षड्चक्रों में पिया बासा, खुले दशम द्वार
ना मूरत हैं न सूरत हैं,
वहाँ जुड़ा मेरा प्यार ॥४॥

जैरामदास कहे, इस मर्म को आत्मदर्शी जाने
गुह्य अर्थ हैं इस भेद का,
बिरला लेवे सार ॥५॥

भजन १९ (चाल : बालम आये बसे । मेरे मन में)

दिन बीता ये रात आयी, सृष्टि चक्र ये रुक ना पाई ॥टेक॥

चले रफ्तार, एक सरीखा, आवत जावत कोई ना देखा
जीव चले चौऱ्यासी फेरा, सत संग बिन मुक्ति न पायी ॥१॥

कोई बने ये झाड झंडुले, कहीं कहीं देखो दरिया नाले
कहीं कहीं देखो पत्थर मुर्ती, सबमें आत्मा बसायी ॥२॥

आपही माली, आपही फुलवारी, पानी देवे ज्ञान झारी
भेद प्रभु का कोई ना जाने, अपनी लीला आप रचाई ॥३॥

भेद न जाने इसका अनाडी, जैसे मृगनाभी कस्तूरी
बन बन घूमे सुगंधि लेने, स्थान न खोज पायी ॥४॥

त्रेता द्वापर, हर दम देखा, कलियुग, सत्युग नूतन देखा
कई जन्म लिये यहां पर, जीव अमर कहलाई ॥५॥
जैरामदास कहे, सत्संगत में ज्ञान बिना विवेक न होवे
सत गुरु कृपा बिन, अनुभव करो दिल माही ॥६॥

भजन २० (चाल आग लगी हमारी झोपडिया में)

न्याय रोवे गुंडे बजरियां में, जहां तहां हल्ला ॥
मान मर्यादा होवे धूडा, अन्याय तुला ॥ टेक ॥
झूठ मूठ का गावे गाना, खावे दाल रोटी
चढी वढी बात करे, आज पसन्द आती
हाय हाय हाय, जिया मचल जाये,अरे धरम डूबते चला सुन ॥१॥
छोटे बड़े की बात न माने, मारे अपने ताने
लाज शरम बिक डाले, करे हजारों गून्हे
छुप,छुप,छुप, करे पाप खूब अरे सत्य का निकला दिवाला ॥२॥
नई नई फैसन आई, व्यसन हल चल की
अहंकार ने ली अंगडाई, बुद्धि भ्रष्ट हुई
धूम धूम धूम, नीति गई गुम, अशांति का रोग फैला सुन ॥३॥
कहै जैराम दास प्रभु पर ना विश्वास
इससे ही हो रहा, मानव का विनाश
दु:ख दु:ख दु:ख, कहीं नहीं सुख अरे संत चरण में भला सुन ॥४॥

भजन २१ (चाल : जहां डाल डाल पर सोने की चिडिया करती है. .)

कई लोग पढ़ते रामायण गीता, समझेना उसका इशारा
हैं ये सब ढोंग धतुरा २

दिखलावे दुनियां को दिखावा, शान में रहता तुला ।।टेक।।

ये लम्बी लम्बी गाल बजावे, झुठी चले चाले
वो दिल में तो ये कटु भावना, मुख से रामनाम बोले
वो सच्चाई की परख ना करे, घूमे मन विषय विकारा ।।१।।

वो धरम करम को जाने नहीं, व्यवहार करे वो गन्दा
वो पर जीवों की दया नं दिल में, प्रभु कैसा होवे फिदा
वो मांस मदिरा सेवन निस दिन, बडबडता भाट बेचारा ।।२।।

वो कहता जैरामदास, बिना समझे ना पढो पोथी,
वो बिना अर्थ की व्यर्थ बातें, सब कुछ है ये थोंथी ।
जितना समझ उतना ही बोले, वो होता जग को प्यारा ।।३।।

भजन २२ (चाल : मेरा जीवन कोरा कागज)

हुआ मस्त, आशिक फकीर दुआ ही पा गया,
कोई देखे मन्दिरों में, तन में पा गया ।। टेक ।।

नीर बरसा अंखियों से, दिया अंग ये धूल
तिलक निष्काम है ये माथे, चढाया सुमन फूल
इत्रदया, शांति का ये, खुशबू महकाया ।।१।।

वैराग्य का चिमटा लेकर, अलख जगाया
ज्ञान की झोली बगल में, भिक्षा लेने आया
निज धन की, भीख मांगु, देवे सांवरिया ।।२।।

तन की होली, धन की धुली, मन प्रभु को दिया
ले पिचकारी. विचारों की, ज्ञान रंग भरा
विवेक के उड़े फौवारे, भीगी चुनरियां ।।३।।

राधा ये मुखडा छुपाये, शाम ललचाये
रंग में ये दंग हुये, एक रूप भये
कहता जैराम मनभाया, दृश्य रोशनियाँ ॥४॥

भजन २३ (चाल– मुझे प्यारा भारत मेरा)

बड़े हलकट पाजी गधे,
स्वार्थ के निभाये वादे ॥टेक॥
काज पुरती देखें ये प्रीति, रखके दुरंगी मन में नीति
ऐसे मूरख हैं ये गन्दे ॥१॥
राम नाम बोलें विपत्ति पर, दुःख निकलते ही जायें भूल वो
प्रभु से हुये वादे ॥२॥
वतलावे ये अपनी शेखी, सज्जन को ये रौंधने की
करते हैं वाद विवादे ॥३॥
पाप कर्म की रुचि इन्हें, सत्य असत्य को नहीं जानें
पाप की गठरी सिर पे लादे ॥४॥
जैराम दास कहे इन काफरों से, व्यवहार करो तुम दूर से
पड़ो इनके तुम ना फन्दे ॥५॥

भजन २४ (चाल– बार बार आवे ना रतन)

महत्व रखते अपने काम का, दया ना आवे फिर किसकी
अपने पेट की फिकिर सबको,
चाहे गति हो फिर किस की ॥टेक॥
आप सुखी तो दुनियां सुखी, यही भाव दिलमें रखते
अपने रंग में दंग वो रहते, जुबा चलाते बहकी सी ॥१॥

लटके रहते स्वास्थ पीछे, लाज शरम सब छोडी रें
सज्जन कितना भी समझावे, भ्रमना न मिटे मनकीरे ॥२॥

सैतान जैसे फिरते रहते, पांव ना थमते इनके रे
हाय हाय दिल में वो रखतें, नींद न लेते चैन की रे ॥३॥

जैराम दास कहे ऐसे नर का,
ठिकाना न लगे कहीं पर,
बन्दर जैसे उछलते रहते
माटी किया जीवन को रे ॥४॥

भजन २५ (चाल-- बार बार आवे ना रतन....)

छूटा बाण वापस ना आवे, घायल करके छोडे रे,
आत्मा से ये निकली आहें, थामे से ना थमे ॥टेक॥

राम नाम में हुआ दिवाना, कर्म कभी ना भूलेगा रे
निष्काम भाव रखे हैं दिलमें, दुनियां से नहीं डरता रे ॥१॥

क्या किसी से लेना देना, क्या किसी की चिन्ता रे
छोड़ी जगत की माया ममता, क्या किसी से रिश्ता रे ॥२॥

तन निछावर किया एक पर, तनकी फिकिर नहीं उसको रे
हाड़ मांस, की काया एक दिन, मिट्टी में मिल जावे रे ॥३॥

सत का जिसने पथ पकडा हैं, झूठ तरफ क्यों जायेगा
जैरामदास कहे सुन भाई,
पाया वो क्यों खोयेगा ॥४॥

भजन २६ (चाल– बार बार नहीं आवे सरतन)

दिल में नही शांति जिसके, ग्यानी वो नहीं कहलावे
विषयों की जब आस धरी, तब
आतम सुख नहीं पावेरे ।।टेक।।

रमा नहीं मन रामनाम में , भक्ति नहीं वो खोजी रे
घिस घिस कर काया धोये, मन को नहीं तू धोया रे ।।१।।

अन्त:करण में मैल भरा हैं, प्रभु कैसा तुझे मिलेगा रे
ग्यान वैराग्य नहीं हैं तुझमें, मुक्ति कैसी पाये रे ।।२।।

लीन नम्रता दया भाव के, गुण नहीं है तेरे पास
व्यर्थ की तू बड बड करता, बकवास करता झूठी रे ।।३।।

जैरामदास कहे विना श्रद्धा के, हरी चरण नहीं मिलते रे
राम भजन बिन शांति नहीं हैं
जीवन जाये व्यर्थ रे ।।४।।

भजन २७ (चाल– पुछो ना कैसे मैंने रैन बिताई)

मेरो मन बावरो, हरिदर्शन को
तरसत अँखिया, पाने डगरियां,
देखन वो मेरी जिगरिया ।।टेक।।

राह भूला हूँ, भटक रहा हूँ !
खोज खोज कर, त्रस्त हुआ हूँ ।
देखन प्रीतम की नगरिया ।।१।।

दिन रात ये, सोचूं मन में ।
कैसी शांति, मिले जीवन में ।।

लावे उनकी कोई खबरिया ॥२॥

इन्तजार में करते बैठा ।
कोई देवे, मुझको पता ॥
आस लेकर, तृष्णा तृप्तिया ॥३॥

भाये ना कोई, सुख संसार ।
जहां देखो वहां, दुःख असार ॥
नीर की हरदम, बरसे अखियाँ ॥४॥

जैराम कहे, प्रीतम बिना
सूना पड़ो है, मेरो जीवन
जलबिन जैसे तड़पे मछलियां ॥५॥

भजन २८ (चाल– पूछो ना कैसे मैंने रैन बिताई)

मेरो धीरज एक सांवरिया,
वोही सुने दुःख की बतिया
कोई ना यहाँ मेरो साथियां ॥टेक॥

मतलब की हैं, दुनिया दारी
करे स्वार्थ हित, प्रेम भारी,
निकलत काम, होवे छलियां ॥१॥

कामी क्रोधी, राहों में ठाढ़े,
हरदम डाले अपने रोड़े ।
चलते आवे कठिनाइयाँ ॥२॥

अनमोल समय निकल रहा है,
काल भौरा, मण्डरा रहा है ।

दिल, धड़के, तड़पे जिया ।।३।।

जिस कारण मैं, यहाँ पर आया
कामना पुरती, कर ना पाया
व्यर्थ, झंझट में, समय खोया ।।४।।

जैराम कहे, दीन हितकारी
अर्ज ये सुन ले, मोरी मुरारी
नाम ये तेरा, मन में बसिया ।।५।।

भजन २९ (चाल– तुम भटको जंगल पर्वत)

तुम भटको मन्दिर मस्जिद, सब सत संगत में पाया है
नहीं कहीं वो दूजा बसा है, अपने में आजमाया है । टेक।।

अनंत ब्रह्माण्ड, तन में धरे हैं, मेरा हरिहर आत्माराम
भिन्न भिन्न बसेरा उसका, विरला मर्म का पावे धाम ।
रोम रोम में ही भरी नशा हैं, राम रतन धन पाया है ।।१।।

इस तन में ही बाग बगीचा, खेती बाड़ी और उपवन
पहाड पर्वत दरिया नाले, नदियां दरियां बहे पवन
सात समुन्दर, चौदा भुवन, एक्कीस स्वर्ग धारे हैं ।।२।।

चन्द्र, सुरज और ये तारे गन, कोटि रश्मि बिखारे हैं
कोयल, पपीहा, गीत गायें, सुन्दर दृश्य प्यारा है
चम्पा चमेली, गुलसन जाई अमिट खुशबू महकाये हैं ।।३।।

माली बनकर, पानी देवे फूल तोडकर ले जावे
आपही फूल और आपही डोरा माला आपही गुंथलावे
खोजी हो तो खोज ले तन में, जैराम ये ही जताये हैं ।।४।।

भजन ३० (चाल : सज रही गली मेरी मां…)

सजा रहे मेरा प्यारा देश, नीति धर्म में
नीति धर्म में, वो धन दौलत में ।।टेक।।

प्रभु तेरे दुंआ की, मिले हम साथ ।
चित्त शुद्ध करे, सच्चाई की हम बात ।
सज्ज रहे वतन सरताज ।।१।।

रहे फलते फूलते हाँजी
उपवन रहे खिलते हाँजी
वो डाल डाल पर हाँजी
वो गाये गीत हाँजी
कोयल की ये बोली, लगती है सबको प्यारी
क्या जाने अनाडी, ग्यान की वो कोठरी
मजा लेवे बासिन्दे ।।२।।

ऋषि मुनी बसेरा हाँजी
संस्कृति सितारा हाँजी
देवे शरण सहारा हाँजी
अहिंसा का नारा हाँजी
अनीति से न्यारा हाँजी
कर्मनिष्ठ का पहरा हाँजी
बन्धुभाव दुलारा हाँजी
भक्त हितकारी हाँजी
मैं क्या जानूं इशारा, प्रभु का वो नजारा
ज्ञान रहे अधूरा, शेष, शारदा हारा

जैराम शरणागत में, प्रभु चरणों में
सजा रहे मेरा प्यारा देश नीति धर्म में ।।

भजन ३१ (चाल : तुम भटको जंगल पर्वत)

जिसके दिल में नीति होती । मरने पर कीर्ति रहती
सच्चाई का पथ जो पकडा । छोडेना कभी वो भक्ति ।।टेक।।

आसमान भी ढले उसपर, उसकी ना कभी करे फिकर
भरोसा रखा प्रभु के ऊपर, बन गया है वो निर्भर
वीरता का वो बाना चढाया, दुश्मन से करे क्रांति ।।१।।

देश धर्म का प्रेम भरा है, वतन के लिए सीना खोला है
भरोसा रखा प्रभु कें ऊपर, तनक ना हिम्मत हारा है
ईमानदारी फर्ज निभावे । तन रहे या होवे माती ।।२।।

विश्वास पुरखों के वचनों पर, ऋषिमुनी और सन्तो पर
आज्ञा उनकी वो पालन करे, पग पग पर वो ध्यान धरे
चिढ़ उसको दगेबाजों की, अनीति पर पीटे छाती ।३।।

स्वाभिमान से जीना सीखा, अभिमान जड से फेंका
परजीवों का दु:ख सुख देखा समरसहो उसको चखा
जैराम कहे देह ऐसा, जोडा विश्व से प्रीति ।४।।

भजन ३२ (गजल ताल धमाल)

फकीरी लगती मुझको प्यारी, उसी का आशिक दिवाना हूँ
नैनों में नशा वो छाई, नजारे देख रहा हूँ ।।टेक।।

बदन पर लंगोटी शोभें माथे भस्म लगाया हूँ ।

गले में तुलसी की माला, सोहम् की धूनी रमाया हूँ ॥१॥

कर मे त्रिशूल चिमटा, बगल में झोली लटकी है
अलख पुकांरू घरघर में, निजधन भीख मांगता हूँ ॥२॥

अनुभव की थाल ये रखी, विवेक का परसा है भोजन
रामनाम का ये ग्रास, भगवान को भोग लगाता हूँ ॥३॥

कहे जैराम प्रीतम की प्रीत, वहाँ पर है हमारी जीत
हरदम यही सुनाता हूँ नैनों की प्यास मिटाता हूँ ॥४॥

भजन ३३ (चाल– मै कहता मै डंके की चोट से)

कान की सुनी आंख की देखीऽऽ अन्तर है दोनों में
अपना अनुभव कर लो दिल में, होवे ना घोटाला ॥टेक॥

मूल कारण क्या है, परख लो, फिर उस पर निर्णय दो
सच झूंठ की, परख तब होवे, तब सज्जन कहलावे
रहे जगत में, बोलबाला, कोई ना उसको भूला ॥१॥

निकले ना जब अपनी बुराई, क्या जाने वो सच्चाई
गन्दगी भरी है दिल में, कैसी हरे पीर पराई,
अपने पर से जग को परखा, अमर पद को मिला ॥२॥

सभी ठिकाने जयजयकार, विना बिजय हुई ना हार
कांपें देख सदा ही काल, देव मुनी करे नमस्कार
अटलबानी का वो मतवाला, आसमान भी ढाला ॥३॥

जैरामदास कहे, सुनमानव, सत, ही तपस्या जीवन
पाप ही एक मूल कारण, जीव करें नित्य रुदन
अखंड शांति जिसने पाया, भ्रम उसका टला ॥४॥

भजन ३४ (चाल– सच्चे सेवक बनेंगे हम)

ये अन्ध श्रद्धा में भोली भाली, जनता सब कुछ भूली है
ये जादू टोना देवी देवता, इसने इनको जकडा है ।।टेक।।

आये जब मुसीबत इनपर, जन्तर मन्तर पर विश्वास
दौड के जाते हरदम वे, छलिया पुजारी के पास
अरे उल्टी सीधी बात बतावें, उसमें तमन्ना मिटाते हैं ।।१।।

परवा न करते धनद्रव्य की, जो कुछ भी वो मांग लेवे
कुछ भी ना घर में खाने होवें, उसकी ना फिकर किये
अरे जोरु बच्चे भूख रहते, उनका ख्याल ना करते हैं ।।२।।

धनी से लेकर विद्वानों तक, इस चक्कर में घूमते हैं
घुमकडु देवता के सामने, दारु बाटल रखते हैं,
अरे हाथ जोडकर सीस झुकाते, पीलो मदिरा कहते है ।।३।।

वाह वाहरे ये अजब तमाशा, संत वचन ना धरते हैं
डाक्टरों का सल्ला न लेकर बुरी फजीती में पडते हैं
अरे सर में दर्द और पांव में पट्टी ऐसी इनकी चालें हैं ।।४।।

जैराम कहे इससे ही तो, समाज की हो रही दुर्दशा,
पतन की ओर चला है मानव, दिल में रखकर ये ईर्ष्या
अरे सत राहो पर जो ना चलेगा, उन्हें चौऱ्यासी फरी है ।।५।।

भजन ३५ (चाल– सच्चे सेवक बनेंगे हम)

अरे भविष्य जिसका उजला नहीं, वो दूसरों का क्या उजला करे
शांति को नहीं पाया जिसनें, पीर पराई कैसी हरे ।।टेक।।

दर दर की ये खाये ठोकरें, पेट भरन की फिकर जिसे
क्या धरा इनके ज्ञान में, घूमे ढोंगी बगुला जैसे
अरे आप अपने को नहीं चीन्हा, दूजे पार कैसा करे ॥१॥

दुविधा में तो पड़ा बेचारा, माया मिले ना राम उसे
घर का रहा ना घाट का रहा, दोनों तरफ से हाथ पिसे
अरे मदारी के बंदर जैसे, चहूँ ओर घूमता फिरे ॥२॥

जैराम कहे कर्म अकर्म, देख के आगे बढते जाओ ।
जिसमें होवे अपनी भलाई, उस पथ को ही अपनाओ ॥
ईमानदारी दिल में रखकर, मानव फर्ज अदा करे ॥३॥

भजन ३६ (चाल-- सच्चे सेवक बनेंगे हम)

सन्तों का ये धरम नहीं, जनता का धन लूट पाट करे
अपना संसार सुखी बनाकर, दुनियां को बरबाद करे ॥टेक॥

जिस नाम की पहिनी माला, फर्ज अपना अदा करे
घिसते रहे वे तन को अपने, सेवा में वो भाव धरे
होवे लगन देश धर्म की, जीना मरना विचार न करे ॥१॥

दुनियां के आगे हाथ फैलायें, कहता अपने को साधु
ऐसे मूरख जहाँ वहाँ फैले पड़े हैं सब भोंदू
राम नाम उच्चारण करे, पर धन पर वे नजर धरे ॥२॥

साधु तो वोही सच्चा है, दुनिया को जो ज्ञान देवे
मुंह बदला वो कभी न मांगे, उपकार उनपर छोड जावे
इनकी कीर्ति जगत में रहती, तबतक रहे चांद सितारे ॥३॥

जैरामदास कहे साधु का हांथ, हरदम ऊँचा हो

जो जो मांगे वो वो देवे, कमतरता ना किसी को हो
ऐसे ही साधु मुझको भाते, वो ही प्राणों से हैं प्यारे ।।४।।

भजन ३७ (चाल– जो तुम तोडो पिया)

जो तुम्हें मांगू प्रभुजी, वो हमे दिजो रे ऽ ऽ ऽ
मुझ दुखिया की बतियाँ, तुम सुन लीजो रे ।।टेक।।

नहीं मांगू सोना चांदी, ना ही मांगू घोडा हाथी
मोरे नयनों में हरदम बसीयों रे ।।१।।

नही मांगू धन सम्पत्ति, नहीं मांगू सुत जाया
तुम्हरे भजन में, घिसे मोरी काया ।।२।।

जप तप साधन कछु ना लागे, तोरे ही नाम की सुरता जागे
अभागे तकदीर मोरे वो जागे ।।३।।

कहे जैरामदास, अर्ज है मोरी, तोरे हाथ में प्रभु डोरी मोरी
ठुकराइये न बिनती, नंद के दुलारे,
हम तोरे भोले बालक तुम्हारे
सुन ये गोपाल ऽ ऽ ऽ सुन ये गोपाल ऽ ऽ ऽ
सुन मेरे मोहन, दीनों के दयाल ।।४।।

भजन ३८ (चाल– बार बार आवे नही नरतन)

राम भजन को नरतन पाया, क्यों गफलत में खोया रे
कंचन जैसी काया तेरी, एकदिन जाये वाया रे ।।टेक।।

अमोल घडी ये मिली हैं तुझको, राम भजन नहीं गाया रे
एक दिन हंसा निकल जायेगा, छूट जायेगी माया रे ।।१।।

धरो रहे महल अटारी, जहाँ वहाँ ये तेरी रे
कोई न तेरे साथ जायेगा, करनी का फल पायेगा रे ।।२।।

दो दिन का मेहमान जगतमें, मेरा मेरा कहता रे
मेरा तेरा छोड के प्यारे, धर गुरु चरण की छाया रे ।।३।।

बार बार ये समय ना आवे, गया वक्त ना आवेगा
जैरामदास कहे सुन ले प्यारे, देख देख तू रोयेगा ।।४।।

भजन ३९ (चाल– बार बार आवे नहीं नरतन)

कोई किसी का शत्रु नहीं है, सुकर्म तेरे मित्र रे
अकर्म तेरे शत्रु बने हैं, सुकर्म तेरे मित्र रे ।।टेक।।

सब जग आत्मा अपनी समझ ले, उसमें मिले तुझे सार रे
ऊँचे विचार दिलमें रख ले सबसे कर ले तू प्यार रे ।।१।।

नेकी करी नेक नाम मिलेगा, बदी करे बदनाम रे
सोच समझ ले अपने दिल में, होयेगा तू भवपार रे ।।२।।

ये काया है कागज की नैया, लहरों मे डूब जावे रे
मगर मछली का जोर यहां पर, बार बार सताये रे ।।३।।

जैरामदास कहे गुरु खेवैंय्या, पार लगावे नैय्या रे
झंझट सारी छोड दे प्यारे, शरणागत तू लेना रे ।।४।।

भजन ४० (चाल– जहाँ डाल डाल पर)

कई लोग बताते चतुराई, छोड़े ना अपनी बुराई ।
दिल मे गन्दगी छाई ।।
ठिकाना नही ईमानदारी का, देखे वो अपनी भलाई ।।टेक।।

ये मीठी मीठी बात बतावें, मन में रखे काला
बनावट चेहरे के ऊपर, फंसावे हरदम भोला
ये मुख से बोले रामनाम, करे काम ये कसाई ॥१॥

वो बिगर पेंदे के लोटे जैसे, इधर उधर वे लुढकते
वो जानबूझकर मतलब से, वे अन्जाने हैं बनते
तबले डग्गे पर हाथ रखकर, कहते हांजी हांजी ॥२॥

वो काना फूंसी दैनिक धन्धा, इन्हें मजा आवे
वो रंग चढे जब इनके सरपर, बढ़ी चढ़ी बतावे
वो सीना जोरी का व्यवहार करते, खोये उमर सारी। ३॥

कहे जैरामदास ऐसे लोफरों से, समाज की होती हानी
इन बेमानों ने जहां वहां किये हैं धूल धानी
वो कडा सबक सिखाओ इन्हें, करने न पाये गद्दारी ॥४॥

(शिवरात्रि के शुभ अवसर पर)

भजन ४१ (चाल– मेरी छोटी सी है नांव)

तेरी लीला बेमिसाल, कोई पावे नहीं पार, तू जगत कर्णधार
कैसे बखानूं, भोलेनाथ रे ॥टेक॥

कैलास में तेरा बसेरा, बहती गंगा की जटा से धारा
गले नाग की माला, कानों में कुण्डल ये डाला,
पिवे हलाहल प्याला ॥१॥

माथे मुकुट चन्द्र की कोर, डमडम डमरु, आवाज घनघोर
अंग तेरा स्वेताम्बर, पहना है तू पीताम्बर
लपटा है तू व्याघ्राम्बर ॥२॥

नंदी पर तू हुआ सवार, अर्ध नारी शोभे नटेश्वर
आदि देव अविनास, जग उत्पत्ति तेरे हाथ
धरे कोई तेरा ध्यास ॥३॥

टूटे जन्म मृत्यु का फांसा, निर्वाण पद का मिले बासा
कहता जैरामदास, पूर्ण करो मेरी आस
तेरा बना रहूँ दास ॥४॥

भजन ४२ (चाल– मेरी छोटी सी है नाव)

मेरे दुर्बुद्धि के भाव कैसे लेऊं तेरो नाम, है भक्ति का अभाव
क्रोध बतावे, ताव रे, ॥टेक॥

हरदम करे मन ये सैतानी, अटपटी चलावे ये बानी
आशा तृष्ण करे जोर, काम मचावे अपना जोर
मद मत्सर घन घोर ॥१॥

राहो में अडंगे डाले, कैसे धैर्य हम तो सम्भाले
चारो ओर हैं तुफान, जीव हो गया बेकाम
मिले नही समाधान ॥२॥

भुली भ्रांति हरदम बहकाये, नैया हरदम हिचकोले खाये
मुझे कोई ना आधार, डुब रहा हूँ मझधार
खिवैय्या करो पार ॥३॥

कहता जैराम किस्ती पुरानी, नदिया में हैं गहरा पानी
दिखती मुझको हानी, बचाओ मुझको स्वामी
बैंया बढ़ाओ घनश्याम ॥४॥

भजन ४३ (चाल– दया करो भगवान)

पवन बरसत, फोड़ीं पहाडियाँ,
गंगा नाम धरो ।।टेक।।

एक नदी के दो है किनारे, एक साथ उपजे रे
भेद उनके हैं ये निराले अपना काम करे ।।१।।

मल मूत्र की बहें नालियां, जाके मिलती बोये दरिया
अवगुन सारा वा मिट जायें, तीरथ पाये रे ।।२।।

पत्थर जैसे मूढमती को, पकडा उसने सत, संगत को
बुद्धि उसकी पल में पलटें, वाल्या वाल्मीक भयो रे ।।३।।

जैरामदास कहे ब्रह्म निराला, यह जगत हैं मरने वाला
आस झूठी छोड दे प्यारे, यम पल्ला रे ।।४।।

भजन ४४ (चाल– बालम आन बसो मेरे)

परमात्मा के सब आत्मा रे
भिन्न भिन्न है उसके नजारे ।।टेक।।

सबमें भरी उसकी शक्ति, कोई न जगह है उसबिन रीती
सत्ता बिन पत्ता न ड़ोले, देवे सबको इसारे ।।१।।

कहीं कही पर पहाड दरियां, कहीं पर उपवन बगिया
पेड़ फूल में वो हैं समाया, महकाये खुशबू रे ।।२।।

तू है चन्द्रमा हम है तारें, एक एक दूजें नहीं रे
अज्ञान नाव जीव धरे हैं, शिव आत्मा स्वरूप निहारे ।।३।।

आगम निगम अगोचर दृष्टि, जैराम कहे मिटे भ्रांति

गागर में सागर समाया, ऐसा उसका जलवा रे ।।४।।

भजन ४५ (चाल– गुरुदेव तुम्हारे चरणों में)

गुरु नाम का हमने ध्यान किया
सब पाप हमारा छूट गया ।।धृ।।

सुमन के फूल चढा,करके
बुद्धि को ये शुद्ध किया ।
षड विकारों को दूर करके
हृदय में आसन डाल दिया ।।
शील नम्रता के भाव धरे ।
हमने उनको स्थान दिया ।।१।।

जो जो देखें दृष्टि से काम ।
ओ ओ समझे हम राम का धाम ।।
उसकी ही पूरती करने को ।
संकल्प किया हमने ही ठाम ।।
वह फर्ज निभाने के लिये
तन मन को निछावर किया ।।२।।

सब जीव जगत आत्मा मानी ।
कल्याण के लिये दिल में ठानी ।।
सेवा की वृत्ति धर करके ।
हमने चलाई ब्रह्म वानी ।।
हित देश धर्म समाज का ।

नारा ही हमने नित गाया ॥३॥
मर मिटेंगे सत् वचनों पर ।
गुरुदेव का फर्ज निभाने को ।
चाहे मुसीबतें कितनी आवें ।
काल का नहीं है हमको कुछ डर ।
जैराम कहे लगन ऐसी ।
दिल में हमने ही ठान लिया ॥४॥

भजन ४६ (चाल : रमला कुडे ग कान्हा.)

संसार सभी दुःख दाई
सुखी यहाँ मिले ना कोई ॥ ध्रु ॥

फिकिर को जला दिया भाई, फकीरी बिरले ने पाई
वोह बना सुखदाई ॥१॥

सत संग की मजा लूटा, बंधन से वो ही है छूटा
रही न झंझट भाई ॥२॥

अपने ही धुन में रहता, निश दिन वो गुनगुनाता
भक्ति उसी ने पाई ॥३॥

लेना देना किसी का नहीं, प्रेम ना बैर कोई
भजन वो ही कमाई ॥४॥

जैराम कहे दृढ विश्वास, जड़ देह का भूला भास
आनंद से उमर विताई ॥५॥

भजन ४७ (चाल : मन तडपत हरि दर्शन)

रंग जा रे तू रसना, हरि के नाम में
जैसे कपडा रंगाये रंगरियां ऽ ऽ ऽ ।।टेक।।
अमृत रस पी मधुमक्खियाँ सम,
तन जाये पर छोडे ना वो धुन
ले ले भक्ति की डगरियां ऽ ऽ ऽ ।।१।।
पल पल जिया डोलन लागे
आत्म उमंगें ये बोलन लागें,
चढ़ जाये नशा देखते पिया ऽ ऽ ऽ ।।२।।
स्वाद लेते जा, स्वानुभव का
प्याला पिये जा, राम रस का
जैराम कहे रम जा कन्हैया ऽ ऽ ऽ ।।३।।

भजन ४८ (चाल : मन तडपत हरा दर्शन)

ललचा.यें ये रसना, हरि गुण बिना
जैसे पति बिन, सिंगार सूना ।।घृ।।
कितना भी धन दौलत होवे,
उसमें कोई तथ्य ना पावें,
पुत्र बिना ये पिता सूना ।।१।।
ज्ञान बिना इंसान सूना है
देव बिना मन्दिर सूना है
त्याग बिना वैराग्य सूना ।।२।।

तड़पे मछली जल के बिना
प्रकाश बिना अन्धा है सूना
अर्थ बिना ये पढ़ना सूना ॥३॥

जिस ज्ञान में राम नहीं हैं,
सर बिन धड़ की शोभा नहीं है
जैराम कहे गुरु भेद ना जाना ॥४॥

भजन ४९ (चाल : बहुत दिन बीते)

भजन बिना, रसना सूनी है जैसे हरि के भजन बिना ॥टेक॥
काया सूनी एक जीव बिना, जीव सूना एक ब्रह्म बिना
ज्ञान सूना एक शांत बिना, शांति सूनी एक लक्ष बिना ॥१॥
भक्ति सूनी एक भाव बिना, भाव सूना एक श्रद्धा बिना
पोथी सूनी एक अर्थ बिना, दया सूनी एक क्षमा बिना ॥२॥
गीत सूना एक राग बिना, राग सूना एक शब्द बिना
शब्द सूना एक संत बिना, तीर्थ सूना एक भक्त बिना ॥३॥
जैराम कहे एक नीति बिना, न्याय सूना एक सत्य बिना
सत्य सूना एक सज्जन बिना, सज्जन सूना एक सत्य बिना ॥४॥

भजन ५० (चाल : अगर है ज्ञान को पाना)

जगत कल्याण के लिए, बदन पर कष्ट झेला है
घिसे दिन रात तन इसका, बेगुनाह कुचला जाता है ॥टेक॥
न्याय उसको ना मिले, दर दर खाये ठोकरे
नैनों से पानी वो निकले, मुसीबत का वो घेरा है ॥१॥

सज्जनता दिल में धरके, भूला है अपना पराया
सभी को अपना मान लिया, वो ही पागल कहलाता है ॥२॥

किसी का दुःख सुन करके, जायें वो हरदम दौड के
दया की भावना धर के बदनामी को पाता है ॥३॥

कहे जैराम आई ऐसी नीति, झूठ से करते है प्रीति
हो रही यहाँ फजिती, काल नें धूम मचाई है ॥४॥

भजन ५१ (चाल : सज रही गली मेरी)

ऊँचा रहे मेरा सरताज,
भक्ति, भावना से, वो कर्म नीति से ॥टेक॥

दया धरम की, करें हम प्रीति
बन्धुत्व प्रेम की अपनायेंगे नीति।
गाते रहें भगवत् गीत ॥१॥

भेद भाव भुलाकर, हांजी
एकता से चलकर हांजी
वो मिल जुलकर हांजी
सच्चाई रखकर हांजी
काम में ही राम को पाते रहेंगे
ज्ञान के दरिया में, नहाते रहेंगे
आदर्शता से करें हम काज ॥२॥

सुविचार मन में हांजी
वो अंत:करण में हांजी
निहित वो रंग में हांजी
वो ब्रह्मानंद में हांजी

लहरों के धुन में हांजी
बरखा के फौवारें हांजी
देखें वो नजारे हांजी
ज्योति की किरणें हांजी
बैठें राम झरोखे हांजी
सब मुजरा लेवें हांजी
जैसी जाकी चाकरी, वैसा वाको दे
दुःख सुख फल वैसा वो ले
करम गति किसी की टारे ना टले
सच झूठ का तू रे, ख्याल कर ले
जैराम कहे धर गुरु बल ॥३॥

भजन ५२ (चाल : अगर है ज्ञान को पाना)

समय का ज्ञान नहीं जिसको, दुःख हरदम है जीवन को
पशु सम जीवन बिताते हैं, निभाता नहीं वचनों को ॥धृ॥

पढा लिखा हो कितना भी, पाबन्द नहीं नियम का
ऐसे निकम्मे लोगों से, धोखा होता है दुनिया को ॥१॥

कहीं ना पावे वो शांति, चिंता ही नित्य सताती
ठिकाना न सच्चाई का, कहना क्या निशाचरों को ॥२॥

भू भार पृथ्वी को बने, खावे पीवे गावे गाने
आलस में दिन बितावे, धिक्कार है ऐसे मानव को ॥६॥

कहे जैराम शब्द से, जगत का व्यवहार चलता
शब्द को जिसने नहीं परखा,
मुफ्त गमाया नरतन को ॥४॥

भजन ५३ (चाल : हाय हाय ये मजबूरी)

(नोट–एक निठल्ले आदमी की कहानी)

हाय हाय ये मजबूर, आदत से है बेजूर
ये दुनिया को तडपायें, तेरी दुविधा की ये बातें
तेरा ईमान डूबा जाये ।।टेक।।

कितनी उमरिया खो दिये, कोई ना काम में लाये
बिना नाम के किये उजरिया,मोह माया की बतियां बतियां
लाज शरम छोड दिये घूमते हैं गलियां गलियां ।।१।।

दिखे, सुन्दर छबीला, शान शौकत में है तुला
जिन्दगी की फिकर ना किया, करे टालम टोला, टोला
सीना फुलाकर चलता प्यारे, मन में फूला जायें ।।२।।

खेती बाड़ी बाप की थी, शराब में सारी खोया
सट्टा जुवा तुझको भाया, बट्टा ये लग गया लग गया
जब तक भी पैसा कौडी, वो तब तक मौज मनाये ।।३।।

अब तुझ पर विपत्ति आई, माथा वो पीटता जाये
पिछले कर्म को देख देखकर, हाथ मलकर रोये रोये
जैराम कहे ये कर्म फल, बोया वो वैसा पाये ।।४।।

भजन ५४ (चाल : हाय हाय ये मजबूरी)

जय जय वीर जवानों, देश के पहरेदारों,
भूमाता के सितारों, ये जान की बाजी लगालो
दुश्मन से मुकाबला करो ।।टेक।।

तुम्हारा है हित इसमें, ऽ ऽ ऽ हरियाली आए जीवन में
बच्चे, बूढे, जवान मिलकर, लगो वतन जतन में
धैर्य मन दृढ रखकर, हिम्मत को ना हारो ।।१।।

शान आन और जान है ऽ ऽ ऽ उसके लिए कुर्बानी
निभाते रहे हरदम बानी प्रण अपना निभाये, निभाये
तन, मन, धन सब दे डालो रहे नाम अमर तुम्हारो ।।२।।

परम पवित्र ये धरती ऽ ऽ अध्यात्म की संस्कृति
राम, कृष्ण और वीर बजरंग, फैली अर्जुन ख्याति
छत्रपति ये शिवरामा, इतिहास तुम निहारो ।।३।।

हम सुधरे जग सुधरेगा, सत्य अहिंसा को धरो
इस नीति से कार्य करे, दुःख सब ये टले, टले
कहता जैराम जाग उठो, ये भूल ना तुम करो ।।४।।

भजन ५५ (चाल : अवताराचे कार्य कराया)

गुरुकृपा जिस पर होती है, वृत्ति निरामय बहती है
शुद्ध होती हैं चित्त बुद्धि, दया भावना उठती हैं, ।।टेक।।

चरित्रता के गुण हो अंग में, भक्ति लगन हो दिल में
चिन्ता फिकर ना किसी बात की,सभी जीवों से प्रीति है ।।१।।

आदर्शता की नीति रखकर, करे व्यवहार ईमानदारी से
भरोसा है स्वकर्मो पर, सुख शांति उसे मिलती है ।।२।।

दुःख दीन दुःखियों के देखकर, नैनों से पानी बहता हैं
तन को निशदिन घिसता रहता,ऐसी जिसमें रुचि के ।।३।।

जैराम कहे ऐसे गुण, हो जिस भाई के पास
वरदहस्त है गुरुकृपा का, सारी भ्रांति मिटती है ।।४।।

भजन ५६ (गुरु की कृपा) (चाल– अवताराचे कार्य कराया)

गुरुकृपा कहीं खरीदी ना जाती, बाजार में ना वो मिलती है।
पडी नहीं वो है सडकों पर, बिकती नहीं वो पैसों से ॥टेक॥

भाग्य जिसके खुल जाते हैं, पूर्व जन्म के कर्मो से
उनको ही मिलती गुरु की दुआ, उन वचनों पर चलने से ॥१॥

कठिन भक्ति है सेवा वृत्ति की, चलने की और निभाने की
महक उठती है खुशबू उनकी, चन्दन जैसे घिसने से ॥२॥

तत्व तत्व में मिलाते रहो, भाव रूपी विचारों को
आत्मा आत्मा से प्रीत जुड़ेगी, नित्य निरन्तर प्रयत्न से ॥३॥

चरित्रवान और शुद्ध वृत्ति हों, श्रद्धा भाव हो कर्मो में
दया भावना दिल में जगी हो, शील नम्रता धरने से ॥४॥

पत्थर पर बीज बोया न जाता, दीप ना जलता तेल बिना
नारी पुरुष बिन पुत्र ना होवे, पेट ना भरे बिन खाने से ॥५॥

जैरामदास कहे सुन लो बाबा, पात्रता हो सत्‌गुणों की
तेरा मेरा मिटे ना जबतक, क्या होगा कान फूंकने से ॥६॥

भजन ५७ (चाल– दुनिया बनाने वाले नूर)

बल पर नाम के हम, डरेंगे ना किसी को ऽऽऽ
चाहे उलझने डालें लाखों ॥टेक॥

मार्ग सत्यता का अपनाया हमने
सेवा में, जीवन लगाया है हमने
होकर दिवाने हम, दिया दिल दीन दुःखियों को ॥१॥

तन की ना रही चिन्ता, आ जाये काल
नाम का सोटा, लगायेंगे गाल
हिम्मत और धैर्यता से, खदेड़ेंगे हम उसको ॥२॥

काला बाजार और भ्रष्टाचारी ये
गुण्डागिरी और जाल साजी ये
चिढ है हमें उनकी, देखा ना जाय अविचार को ॥३॥

सत्य से रिश्ता हमारा है भाई
चाहे अमीर हो या गरीब कोई
जैरामदास कहे, जीना मरना है हमको ॥४॥

भजन ५८ (चाल– लाडक्या पुंडलीका भेटी)

किस्मत को जिसने अजमाया
नसीब किसका न धोया जाता
खुश है उस पर विधाता ॥धृ॥

नसीब किसका धोया जाता जो लिखा है वो ही होता
कहीं ना पडती, उसे कमतरता,
जो नर ईश्वर को भाता ॥१॥

कितने ही तुम डालो रोड़े, फिर भी ना उसके कार्य बिगड़े
और दुगुना होता जावे,
मूरख तू क्यों चिल्लाता ॥२॥

रक्षक जिसका दीनानाथ, नित्य निरंतर रहता साथ
टाले ना उसकी, कभी वो बात,
उस का मर्म बिरला पाता ॥३॥

जैराम कहे पापियों को प्रयत्न करो तुम कितने लाखों
छोडे ना अपनी, चाल दुरंगी,
सज्जन को सताता रहता ॥४॥

भजन ५९ (चाल : दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण)

मिलना मिलाना सीखो, उजले भाव मन में रखो
उसमें ही प्रभु को देखो, ये ही मानवता परखो ।।टेक।।

जब में ही बुरा, वैसा जग दिखे ये सारा,
ये मन का खेल है न्यारा, वैसा भाव है हमारा
मुख में राम हाथ में काम ऽ ऽ ऽ
जैसा तू जग वैसा है, आप अपने को तुम निरखो ।।१।।

तेरी सकल और प्रभु सकल में, कोई अन्तर ही नहीं हैं
तू और सब एक ही है, अज्ञान का परदा गिरा हैं
मुख में राम, हाथ में काम ऽ ऽ ऽ
ना छोटा है ना बडा है, इसका तुम भेद ना रखो ।।२।।

ये माया का परदा खोलो, अनेक एक में तोलो
एक सधा तो सब सधा, ये ही फर्ज कर लो अदा
मुख में राम, हाथ में काम ऽ ऽ ऽ
तुझे दिखे ना कोई दूजा, तू प्यारा होगा सबको ।।३।।

पाये अमर अविनासी पद को, प्रभु रूप देख ले सब को
कर ले इसका विचार, होगा माया जाल से पार
मुख में राम, हाथ में काम ऽ ऽ ऽ
कहे जैराम समझ का फेरा, जो समझा मिला उसको ।।४।।

भजन ६० (चाल : सच्चे सेवक बनेंगे हम)

मरना मिटना खेल हमारा, अपने देश के खातिर
चाहे कितनी मुसीबत आवे, छोड ना हम दिल का धीर ।।धृ।।

बुढे से बच्चे तक को, सिखायेंगे अमन का पाठ
हर वक्त तैयार रहें, छोड़ें ना हम सच्ची बात
प्रेम देना, प्रेम लेना, यही हमारा मजहब धरम ।।१।।
द्वेष भावना, छुआ छूत को, जड से भगाना यही मरम
दीन दु:खियों को गले लगायें, यही हमारा नित्य करम
प्रेम का नाता निभाते रहना, मर्यादा के वो पथ पर ।।२।।
छल कपटी से टक्कर लेना, इसमें है हमारी शान
जय जवान और जय किसान, यही हमारी हैं ये आन
टिका के रखना संस्कृति को, यही हमारे है विचार ।।३।।
जैराम कहे मातृभूमि पर, कुर्बान हो जायेंगे
डर ना रखेंगे किसी बात का अपना फर्ज निभायेंगे
रण में उतरा जो वीर, अरे कभी ना आये लौटकर ।।४।।

'छन्द'

भजन ६१ (चाल : हरि का सुमर)

राम नाम बिन व्यर्थ उमरिया, मुफ्त में खाना चाहिए
हर श्वास पर ध्यान देकर, श्वास गमाना ना चाहिए ।।टेक।।
सत्य काम के लिए कभी भी, पीछे हटना ना चाहिए
किसी भाई पर आई मुसीबत, बहाना बताना ना चाहिए ।।१।।
पराये पर कभी भी, अवलम्बित रहना ना चाहिए
झूठ मूठ का धन कमाकर, गुजरन करना ना चाहिए ।।२।।
दीन दुखियों को दु:ख देकर, कभी सताना ना चाहिए
मानवता के पथ हर चलकर, इमान खोना ना चाहिए ।।३।।

मर्यादा का पालन करके, अमर्यादा न चलाना चाहिए
कुसंगत का साथ कभी भी, भूलकर धरना ना चाहिए ।।४।।

धन दौलत होने पर कभी भी, गर्व न करना चाहिए
नहीं रहने पर धन के खातिर, लालच न करना चाहिए ।।५।।

जैरामदास कहे सत्य के बिना, पग न उठाना चाहिए
आये मुसीबत अपने पर, धैर्य न खोना चाहिए ।।६।।

छन्द

भजन ६२ (चाल– हरी का नाम सुमर)

विश्वास देकर किसी भाई को, व्यर्थ फसाना ना चाहिए
देकर दिलासा किसी भाई को, दिल को तोडना ना चाहिए ।।ध्रु।।

आस पराई कभी भूलकर, किसी की करना ना चाहिए
अपने आत्मा पर विश्वास रखकर, डगमगाना ना चाहिए ।।१।।

स्वारथ हित की बात किसी से, कभी चलाना ना चाहिए
अष्ट अंग अच्छे रहने पर, भीख मांगना ना चाहिए ।।२।।

जहाँ दो की चर्चा चलती हों, बीच में बोलना ना चाहिए
कोई एकांत में बात करे तो, छुपके सुनना ना चाहिए ।।३।।

बिना आदर के किसी के घर में, भोजन करना ना चाहिए
अपने बात से दिल दुःखता हो, बातें करना ना चाहिए ।।४।।

किसी की हित की बात हो तो, चुप रहना ना चाहिए
अपने पेट के खातिर कभी भी, हाथ फैलाना ना चाहिए ।।५।।

काज पराये के लिए भी, कसर करना ना चाहिए
सच्चे मित्र की कभी भी दिल से,रूह तोडना ना चाहिए ॥६॥

आये मुसीबत उसके ऊपर, साथ छोडना ना चाहिए
नारी, मित्र, कुटुम्ब परिवार,मुसीबत में आजमाना चाहिए ॥७॥

कसौटी पर नहीं उतरे तो, त्याग करना पाप नहीं है
अपना हित साध कर के, पर हित भूलना ना चाहिए ॥८॥

कहे जैराम राम भजन बिन, उमर गमाना ना चाहिए

भजन ६३ (चाल– प्रभु तुम भक्तों के)

प्रभु मेरे नयनों में रहो तुम ठाढे ।
मन ना नहीं ये ढले ॥टेर॥ प्रभु

मन बुद्धि ये खाये हिचकोले,
सम्भाले से ना सम्भले ॥१॥

चित्त विचारों को करे बेजार
हरदम वो उछले ॥२॥

आशा तृष्णा निशदिन सताये,
लालच में ये डाले ॥३॥

निसदिन काम क्रोध ये जकडे,
नाम में डाले रोड़े ॥४॥

जैरामदास कहें दया करो
तेरो नाम ना भूले ॥५॥

भजन ६४ (चाल : प्रभु तुम भक्तों के . . . .)

प्रभु तेरो खेल है अचरज भारी
क्या जाने हम संसारी ।।टेक।।
येक बूंद से विश्व बनाया,
पंचतत्व कारागीरी ।।१।।
तीन गुन धरे हैं सब में,
माया नाम धरी ।।२।।
पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश
ब्रह्म चैतन्य निराकारी ।।३।।
हाड़, मांस, रुधिर भरा है
किया चमड़े की पुतली ।।४।।
श्वास श्वास का खम्बा बनाया
झूला देत एक नारी ।।५।।
जैरामदास कहे निर्गुण सगुण,
प्रभु आगम निगम व्यापारी ।।६।।

भजन ६५ (चाल : प्रभु तुम भक्त के हितकारी)

प्रभु तैने मोरी सुध बिसारी
तरसत अंखिया मोरी ।।टेक।।
इत उत ढूंढत, पैय्यां थक गये
हया ना आवे थोडी ।।१।।
जन्म देकर, तैने भुलायो

कैसी बात ये तोरी ।।२।।

करना था ऐसी, फजीती तुझको

काहे जनम को डारी ।।३।।

प्रीति जोडकर मुख तू मोडा,

कौन कहे कँवारी ।।४।।

वेद पुराण कहे दया के सागर

मोहे लगे अचरज भारी ।।५।।

जैरामदास कहे धीरज छूटो

हो रही हँसी ये मोरी ।।६।।

भजन ६६ (चाल : प्रभु तुम भक्त के हितकारी)

प्रभु तुम जाकर कहाँ बसे,

जाकर कहाँ बसे ।।टेक।।

रो रो अंखिया, निशदिन तरसें

कौन इसको पोंछे ।। ।।

ऊँचे चढकर, पंथ निहारूँ,

दिखे न तू नजरों से ।।२।।

तीरथ धाम को खोज लिया है

त्रस्त हुआ इस तन से ।।३।।

जप तप साधन करके देखा

मिली न शांति उससे ।।४।।

मन ये मेरा बडा हरामी,

ठहरे ना थामने से ।।५।।

पल पल बीते, उमरियां सारी,
जा रहा दोनों तरफ से ।।६।।

काम नाम में पडा ये खिचडा,
कौन छुडाये इससे ।।७।।

जैरामदास कहे दया करो तुम
उबारो भाव से ।।८।।

भजन ६७ (चाल– प्रभु तुम भक्त के हितकारी)

अरे भाई मैं तो राम दिवाना
श्याम बिना ना चैना ।।टेक।।

जिधर भी फेरूँ ये नजरियां
दिखे ना बिराना ।।१।।

तोमें, मोमें खरगखम्ब में
कहीं नहीं है सूना ।।२।।

स्थूल सूक्ष्म, कारण से न्यारा
स्वरूप है निर्वाना ।।३।।

ब्रह्म रस का, पीकर प्याला
मतवाला मैं बना ।।४।।

वो मेरे तरुवर, मैं बना पतिया
जुड गई नैनों से नैना ।।५।।

जैरामदास कहे भेद छोडकर
अभेद में वो बना ।।६।।

भजन ६८ (चाल– सबके लिये खुला है मन्दिर)

जलवा तेरा ये सबमें, कैसा उसे निहारूँ
नहीं ज्ञान बुद्धि मुझमें, नैनों में कैसे डालूं ॥टेक॥

लीला अजब हैं तेरी, कोई ना पार पाया
तेरी ही बस कृपा से, तेरे ही गुन गाया
मैं क्या जानूं अनाडी, क्या छोडूं क्या मैं धरूँ ॥१॥

सब में तेरा बसेरा, कोई नहीं अधूरा
तीन लोक चौदा भुवन, हर घर तेरा है डेरा
बिना आज्ञा के तेरे, हाले ना पत्ता तक ॥२॥

छिपे ना पाप पुण्य, कितना कोई छुपायें
तिल भर ना वो रहे, ऐसी तेरी निगाहें
घट घट की जाने बातें, ऐसा है तू दयालू ॥३॥

कहता है जैरामदास, कर दे दया तू मुझ पर
देखूं तेरे स्वरूप को, कृपा कर इतनी मुझ पर
दास की बिनती सुनले, तुझसे ही प्रीति जोडूं ॥४॥

भजन ६९ (चाल– सबके लिये खुला है मन्दिर)

अज्ञान में उमर खोया, पाना था वो ना पाया
पीछे माया लगाया, उसमें ही भूल गया ॥टेक॥

मन्जिल है दूर तेरी, भूल मत तू अनाड़ी

मिट्टी में मिल जावें, तन काया की ये पुतली
रेती के जैसे टीले, होवे पल में सफाया ॥१॥

सराय मुसाफिर की, कोई आये कोई जाये
खेल यही धरा है, आना जाना लगायें
दिन रात ये दो चूहे, आयुष्य काट खाया ॥२॥

पूंजी सारी गमाई, कुछ ना किया कमाई
ले जावे क्या वतन को, कर्जा किया है भारी
बुरे कर्म को देखकर, क्या मैंने यह किया ॥३॥

बस में ठगों के हुआ, गले में फंदा डाला
विषयों में दिल रमाया, घर की सुधि तु भूला
जैराम कहे काल पक्का, ना छोड़े विन ॥४॥

भजन ७० (चाल– खेलो खेलो नंदलाला)

बोल बोल नंदलाला, हम संग, गोड़ ऽ ऽ ऽ रसीली
बसो मोरे मन में ऽ ऽ ऽ
जा मे हित हो, मेरो प्रभुजी ऽ ऽ ऽ ॥धृ॥

पीत पीत रस, ब्रह्मरस प्याला,
रंग रंग मिलूं स्वरूप ओ चिन्मय ऽ ऽ ऽ ॥१॥

नित नित छवि, देखूं मैं तेरी,
दग दंग रहूँ, मोहनी मूरति ऽ ऽ ऽ ॥२॥

प्रीत प्रीत, तोरी, जुडत मोरे संग
भंग, भंग, होवे, त्रिताप ये जंग ऽ ऽ ऽ ॥३॥

तंग तंग हुआ, कितने जन्मों से
दुःखी दुःखी भया, जैराम तोरे बिन ऽ ऽ ऽ ॥४॥

भजन ७१ (चाल-- ऊँचा मकान तेरा)

सम्भल के चल प्यारे, राह बड़ी जटिल है
कोई ना साथी तेरा, सफर बडा कठिन है ॥टेक॥

कितने अड़ंगे आये जिया वहाँ घबरायें,
ठोकरे खायें हरदम, चढ नहीं पायें,
मुश्किल है आगे बढ़ना, किस्मत वाले चढे हैं ॥१॥

मार्गपर चौकी पहरे, है ये बड़े घने रे
पल पल आवें ये रोड़े, भयंकर रूप धारे
कहीं शेर दहाड मारे, दृश्य बडा बिकट है ॥२॥

घड घड, मेघा गरजे, कई बार बिजली चमके
रिमझिम बदरवा बरसे, अंधियारा प्रकाश दिखे
कानों में नांद झनके, अनहद नाद भरा है ॥३॥

दृश्य और अदृश्य, विचित्र वहाँ की शोभा
बिन नैनो से वो देखा कोटि सूर्य की प्रभा
जैराम गुरु कृपा से इस भेद को पाया है ॥४॥

भजन ७२ (चाल- ऊंचा मकान तेरा)

तेरे दिदार खातिर, आशिक मैं हूँ दिवाना
कर दो दया तुम मुझ पर, प्रण को मेरे निभाना ।।टेक।।

लाखों जनम ये बीते, खाया ऐसे ही गोते
कहीं शांति को न पाया, हरदम रहा मैं रोते
कोई ना सुने बातें, कहीं ना लगा ठिकाना ।।१।।

जो भी मिला है मुझको, अपना ही स्वार्थ देखे
माया का स्वाद चखे, अपनी गरज वो परखे
हुई यहाँ फजीती, भूल भूलैय्या का गाना ।।२।।

अब तेरे सिवा मेरा, जगत में नहीं कोई
आस ना रही कहीं, तेरे चरण दुहाई
ठानी है अपने दिल में, नाम पे तेरे मरना ।।३।।

कहता है जंगम दास सन्तों का रहे साथ
इतनी ही कृपा करना, दिन दयालू नाथ
कीचड में घोर फंसा, नैय्या पार लगाना ।।४।।

भजन ७३ (चाल- अवताराचे कार्य कराया)

करो व्यवहार आदमी देखकर, वैसे ही तुम चलते जावो
जेंसे को तुम वैसे वनो, विचार वैसे देते जावो ।।टेक।।

शब्द से ही पहिचान होती है, भावना उसके मन की
क्या इच्छा हैं उसके दिल में, बात है ये परखने की
सतर्क रहो हर वक्त ही, भेद उसी का लेते जावो ।।१।।

कैसा भी वो गाल चलावे, मीठी बात सुनावे
मतलब क्या हैं निरखते जावो, वैसा ही व्यवहार करते जावो
तभी तुम को शांति मिलेगी, जीवन के रहे ऊंचे भाव ।।२।।

भोलेपन से काम न चलेगा, कब किस पर फासा डालेगा
त्रस्त करेगा जीवन तुम्हारा, दे कर के ओ हरदम दगा
जैंरामदास कहे सोच समझ कर, समझते जाव दूसरों
का दाब ।।३।।

भजन ७४ (चाल– अगर है ज्ञान को पाना)

सज्जन दिल खोल कर के, सभी से बातें करते हैं
कपट ना तनिक भी रखकर, प्रेम से वार्ता करते हैं ।।टेक।।

दुष्ट ये उनकें वचनों का, फायदा लेते रहे हरदम ।
अपना काम बनने पर, उसी का गला दबाते हैं ।।१।।

सच को झूठ करते हैं, उन्ही पर डालते फन्दे ।
हरदम उनको सता करके, चैन ना लेने देते हैं ।।२।।

ऐसे ही पाजी लोगों से, धर्म की हो रही हानी ।
ईमानदार जा रहा रौंदा, इसी से पाप छाया है ।।३।।

कहे जैंराम जमाने ने, करवट कैसा लिया है ।
नाश के चिन्ह दिखते हैं, मानवता डुबी जा रही हैं ।।४।।

भजन ७५ (चाल– हे रामचंद्र कह गये सिया से)

राज्य सभा में न्याय न होगा, ऐसा एक दिन आयेगा ।
सच्चे को तो फांसी होगी, झूठा मौज उडायेगा ।।टेक।।

धर्म कर्म तो ताक में रखकर, पेट भरेंगें छल करके ।
दया रहेगी न मन में थोड़ी, क्रोध करेंगे डट करके ।
लाज शरम तो तनिक न होगी, इज्जतदार कहलायेगा ।।१।।

घर घर में तो झगड़े होंगे, फूट बढेगी मनमानी ।
जरा जरासी बात बात पर, प्राणो की होगी हानी ।
क्रोध के वश में होकर मानव, हानी कर पछतायेगा ।।२।।

परख न होगी बाप बेटी की, मस्ती में अंधे होंगे ।
उपर से तो भले दिखेंगे, कर्मो से गंदे होंगें ।
व्यभिचार मे डुबे रहेंगें, हरी नाम नहीं आयेगा ।।३।।

बेटा बाप का कहना ना माने, अपनी शान बतायेगा ।
बहू सास पर रोब जमावे, आदर नहीं मिल पायेगा ।
पत्नी को पतिप्रेम न होगा, आन पुरुष मन भायेगा ।।४।।

कितनी ही अनहोनी बातें, खुलकर सन्मुख आयेंगी ।
इस युग की महिमा ही ऐसी, बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगी ।
जैरामदास कहे इन सब से, विरला ही बच पायेगा ।।५।।

भजन ७६ (चाल– शाम ढले जमुना किनारे)

सन्तों के सत संगत में जा रे।
जा रे मन जा तू हरी गुन गा रे।
उसके बिना तुझको रे, नही कोई तारे।
सन्तों की वानी तू ध्यान मे ला रे ॥टेंक॥

तू मत शरमाये क्यों तू घबराये
हरी गुन के बिन रे, जीव नहीं सुख पायें
देख रंग माया का जी मचल मचल आये
काम क्रोध आदि के, पास पास मंडराये
व्यर्थ समय मत तू गंवा रे ॥१॥

ठगनी है माया, किसने भरोसा किया
तू है खिवैय्या, कब डूब जायेगीं नैय्या
निंदिया मे सोंये मत, हो जा सावधान रे
अनमोल इस घड़ी का रख थोडा ध्यान रे
सन्तों के सतसंग में जा रे ॥२॥

क्षण में जाये मनवा रे, क्षण में लौट आये
एक पल भी ये कही रुक ना पाये।
ऐसा है रे रवैया, सुन ले रे खिवैय्या।
घूमता है मारा मारा, ठिकाना ना तेरा रे
मनवा तू काम ये बुरा, छोड दे सब सारा रे
जैराम कहे प्रभु शरण जा रे, जा रे ॥३॥

भजन ७७ (चाल : तुम भटको जंगल पर्वत)

करे बढ़ाई कलियुग की वो, पापियों को मान मिले
सत्यज्ञान ये कुचला जावे, किसके पास वो बतलावे ।।टेक।।

झूठ मूठ की गाल बजावें, पण्डित वोही कहलावे
पूजा पाठ वो करना छोडा, लोफर शाही फैलावे
बहकी बहकी बातें करें, बहुरुपिया भेष बनावे ।।१।।

शूरवीरता की बात चलावे, क्षत्री के हैं हम बेटे
लडने की जब पारी आवे, चूल्हे पास छुपे बैठें
शिवाजी और बाजी प्रभु के, नारे हरदम लगावे ।।२।।

चरित्र को वे पढते निशदिन, कायरता नहीं भूलते हैं।
दारु बाटल पीकर के वो, घर में दंगा मचाते हैं।
लाज शरम सब बिक्री किये, धरम करम सब डुबा जावे ।।३।।

तिलक लगावे वेश्य कहके, घण्टी बजावे मन्दिर जाके
काला बाजार करे जम जम के, भाव नहीं है दया के
भोले निर्बल, नित्य फंसावे, पेट के बन सिपाई वे ।।४।।

शूद्र लोक ये हरि गुन गावें, तन में जनेऊं चढावे
सेवा का तो पंथ भूले ये, आलस रंग दिखलावे
जैराम कहे वर्ण चारी, भ्रष्ट हुये ये कर्मों से ।।५।।

भजन ७८ (चाल– मन भुला भुला फिरे जगत)

दिन ढले ढले चली उमरिया,
काहे भूलता रे ॥टेक॥

यह जगत है स्वप्नों का मेला, जागत होय बिराना
दृश्य अदृश्य कोई ना दिखे, समय क्यों खोता रे ॥१॥

पांच तत्व की तेरी काया, तीन गुण मिलाया
नारायण अन्दर है बैठा, उसको ना पाता रे ॥२॥

स्वास रतन है अमोलिक धन, दे इस पर तू ध्यान
रतन का तू जतन कर ले, छोड ममता रे ॥३॥

कोई ना साथी तेरा यहाँ पर, वक्त पे काम ना आवे
आया अकेला जाये अकेला, क्यों गोता खाता रे ॥४॥

बाज पक्षी चिडिया पछाखे, लागे ना पल घड़ियाँ
वैसी तेरी गति होवेगी, काहे ना चेते रे ॥५॥

जैरामदास कहे रे मनवा, छोड झूठी आस
प्रभुनाम का ले तू सहारा, छूटे व्यथा रे ॥६॥

भजन ७९ (चाल– मैली चादर ओढ के कैसे)

नोट– दुर्गे की प्रार्थना

हे जगतारण, विघ्न निवारण, विश्व की महारानी
ध्यान धरे सब संत मुनि, पल में मुक्ति दीन्ही ॥टेक॥

असुरी वृत्ति बढें धरती पर, शांति ना चारों ओर
किसी जीव को शांति ना मिले, पाप बढें घन घोर
अवतरती तू रक्षा करने, दमन करे अभिमानी ॥१॥

अगम निगम में बासा तेरा, वेद भी चारों बखानें
मूढ़मती में क्या बखानूं, भेद ना तेरा जानें
सभी देवता अर्ज करें ये, ऐसी तेरी करनी ॥२॥

जब विकराल रूप धरे तू, दुष्ट दलन संहारन
सौम्य रूप जब तुम धरती हो, भक्तों के हित कारण
नाम तेरे ये असंख्य कोटी, जपे मुक्त होवे प्राणी ॥३॥

जैरामदास द्वार खड़ा है, दर्शन की भीख मांगें
नेत्र ललचायें स्वरूप देखने, और ना मांगू आगे,
विनती मेरी सुन लो मैया, जनम जनम संग दीन्ही ॥४॥

भजन ८० (चाल- अगर है ज्ञान को पाना)

सन्तों के पास है दया, दुष्टों के पास है माया
एक दूसरे का ना पटे, दोनों में भेद है भैया ॥टेक॥

निभावें श्रीद को अपने, जीवों को शांति दिलाने
रात दिन ये ही रहे चिन्ता, सुगम होवे समाज की काया ॥१॥

भाई चारा और बन्धु प्रेम, यही मर्यादा की राहें
सभी का हित हो उसमें कि उज्वल जीवन मुसकाया ॥२॥

मैं तू का भेद ना फैलें, गरीब और अमीरों में
सभी को एक ढांचे में, बदलना संतों की माया ॥३॥

रखकर निष्काम वृत्ति, करे देश धर्म की उन्नति
कहें जैराम संत मर्म, बिरले ने ही है अजमाया ॥४॥

भजन ८१ (चाल– देख रही दुनियां सारी)

तरसे अखियाँ राम मिलन, दिल में लगी है ये ही लगन
निश दिन ज्वाला भड़के तन में, आस लगी है प्रभु मिलन ।।टेक।।

काम काज में, चित्त ना लागे, सतसंग में मन भागे
हरदम यही चिन्ता सतावे, भेद मरम का कब पावें
इन नैनों में चैन कहाँ२, उठे दिल में वो ही धड़कन ।।१।।

गम न रही ये रैन दिन की, उठे तरंगें लहरों की
भूल पड़ी हैं दिशा सारी, कहाँ बिजली तारे चमके,
नाद धड़ धड़ कान सुने२, कोटि प्रकाश तारा गन ।।२।।

दृष्टि में ये सृष्टि भरी, ब्रह्म दिखे कनकन में
कोई ना अपना पराया दिखे, निसर्ग के स्वाधीन ये
कहता जैराम अनुभव पाया, गुरु कृपा का लगा के अंजन ।।३।।

भजन ८२ (चाल– राम सुमर राम सुमर)

श्याम देखत, श्याम देखत
श्याम बन जात है ।।टेक।।

काया की भूली सुध, आत्मा से लगी प्रीत
गागर में सागर जैसे, मेल मिलत जात है ।।१।।

नैनों में नैना समायें, जीव शिव मिल जायें
भेदिया ही भेद पाये, रूप स्वरूप खेल है ।।२।।

मिटे भ्रम, पद पाये, निसंग वृत्ति बन जाये
स्फूर्ति में चेतना आये, लहर बरखा बरसत हैं ।।३।।

ज्ञान–सागर अनुभव पाने, अजमात है संतमुनी
कहे जैराम जो कोई जाने, मूरख विद्वान् होत हैं ।।४।।

भजन ८३ (चाल– कश्याला काशी जातो)

छोड तू झूठी प्रीति रे बाबा, छोड तू झूठी प्रीति ।
राम नाम बिन मिले न शांति ॥टेक॥

जनम लिया वो मरने वाला, हंसा छोड़ेगा चोला
कोई ना यहाँ रहने वाला, चली आई जगत की रीति ॥१॥

दिखे जो जो, नाशवान वो, टिकाऊँ नहीं वतन
झूठें भ्रम में भूल रहा तू, आयुष्य कर रहा माटी ॥२॥

कहता है सुत नारी हमारी, कहता धन दौलत हमारी
होवें जब चलने की तैयारी, कोई ना चलेगा साथी ॥३॥

नंगा आया नंगा जावेगा, कफनी न साथ आवे
जैसी करनी वैसी भरनी, वैसी मिलेगी गती ॥४॥

जैरामदास कहे रे बाबा, नादानता तू छोड़
अपनी भलाई चाहता है तो, सत कर्म में रख मती ॥५॥

भजन ८४ (चाल– जिन्दगी एक सफर है)

राम नाम दे जिसको दिलासा
मिटे भ्रांति पूरी होवे आशा ॥टेक॥

चाहे कितनी भी आयें मुसीबत छोड़ें ना मार्ग धरें धीरज ।
चाहे बोले, कोई भी कैसा ॥१॥

तन, मन, धन, निछावर किया, उसने ही आतम मर्म पाया
धन के लोभी, क्या जाने दशा ॥२॥

सब जीवों से प्रीति जुडी, किसी को ना समझे अपना वैरी
जनहित ही, उसकी लालसा ॥३॥

सच्चा मर्म उसी ने पाया, मायावी ने, सब गमाया
अन्त काल में, होवेगी निराशा ।।४।।

जैराम कहे, क्या जाने अन्धा, सतमार्ग की वो गाथा
पद पाया उसने अविनासा ।।५।।

भजन ८५ (चाल– कश्याला काशी जातो)

नाम रतन अविनासी रे बाबा, नाम रतन अविनासी
धन को समझा जिसने माटी ।।टेक।।

अनमोल पारस जिसने पाया, जन्म मरण चुकाया
सारी झंझट, छूटी उपाधी, निर्गुण पद निवासी ।।१।।

छोड़ी आशा, झूठे जग की, छोडे हंसा दूध पानी
वैसी उनकी वहाँ रहनी, माया से वह उदासी ।।२।।

मर्म उसका बिरला ही जाने, जिसने किया संगती
भेद उसका उसने पाया, उसको ही मिली शांति ।।३।।

जैरामदास ने पा कर गलाया, सच्चा पागल कहलाया
उसके ही बल पर चलती है, विश्व की संस्कृति ।।४।।

भजन ८६ (चाल– तेरे पूजन को भगवान)

मूरख क्यों करता है जलन,
कुटिल भावना मन है मलिन ।।टेक।।

किसका हुआ है इससे भला, यह जग चला चली का मेला
कोई नहीं रहनेवाला, जल्दी कर ले प्रभु से मिलन ।।१।।

काम क्रोध, निश दिन सतावे, क्या कमावें क्या गमाये
पाप पुण्य परख ना आये, उमर ना रही कर ले जतन ।।२।।

मेरा तेरा देख रहा है, उसमें तू डूबा जा रहा है
तोडा ईश्वर से नाता, अन्त में करेगा रुदन ॥३॥
कहे जैराम चली ना किसी की, रावण जैसे अभिमानी की
सोच समझ के पग तू धर, नहीं तो चौर्‍यासी बंधन ॥४॥

भजन ८७ (चाल– गुण दोष हमारे ना)

प्रीतम से जब प्रीत जुड़ें, माया से तब ही मुख मुडे
जब तक न पावे मर्म को, आत्म तत्व से कैसा जुडे ॥टेक॥

मिटी नहीं मन की भ्रांति, कैसे पावे तू सुख शांति
इन्द्रियों पर करे क्रांति, विषय विकार सब गल जाते
सहारा ले संयम नियम का तब भाव–भक्ति को पकडे ॥१॥
भक्ति से मुक्ति पद मिलें, युक्ति से मरना सीख ले
स्वरूप नैनों में पा ले दिव्य दृष्टि से परख ले
किसी की ताकत ना वहाँ चलें, कितने भी होवे चढे बढे ॥२॥
कर्ता–अकर्ता वो ईश्वर, निर्विकार है परमेश्वर
अलख निरंजन है शंकर, एक ही बसा जल थल नभ पर
जैराम मर्म को जानें बिना, जन्म मृत्यु ये ना टले ॥३॥

भजन ८८ (चाल– देख रही दुनिया सारी)

मिले न भक्ति तन को भूले, अंतरंग मजा फिर मिले
बिना कर से माला फिरे, दांत हले ना जिभही चले ॥टेक॥

अपना अनुभव आप ही होवें, कोई ना दूजा दिखे वहाँ
जहाँ तहाँ तू एक धरा है, दृष्टा बनकर के बैठा वहाँ
स्वप्न जागृत, में देखा, सहज समाधि में डोले ॥१॥

स्थिर होवे मन चित्त बुद्धि, मिटें सारी उपाधि
आशा तृष्णा पल में मिटें, कोई न व्यापें वहाँ व्याधि
उठे निसंग वृत्ति विचार, लहरों की बरखा खोलें ॥२॥

ज्ञान विवेक की झडियां बरसें, स्वाती नक्षत्र चकोर तरसे
ब्रह्म रस ये हंसा पिवें, सोहम् सोहम् बोले मुख से
जैराम कहे पद जो पावें, जन्म मृत्यु पल में टले ॥३॥

भजन ८९ (चाल– ये कैसा सुर मन्दिर है)

हे भगवन करुना सागर,
मेरी विनती सुन लो
माफ करो प्रभु गल्तियों को, अपनें चरणों में लगा लो ॥टेक॥

दिदार का मैं दिवाना, तडप रहा है जिया
रात दिन चैन नहीं है, क्षीण हुई मेरी काया
कोई ना चीज मुझको ना माये, अरमा मेरा मिटा लो ॥१॥

क्या पाया, क्या खोया, इसका नहीं मुझे गम
सारी उमरिया बितते चली है, पल पल हो रहे कम
मारा मारा घूम रहा हूँ, प्यासे की प्यास बुझा लो ॥२॥

तू ही मेरा जीवन साथी, तू ही नेत्रों की ज्योति
तेरे बिना मिटें ना भ्रांति, तेरे पास मेरी शांति
चाहे मारो, चाहे तारो, कितना भी मुझको तौलो ॥३॥

छोडूगां ना तेरा पीछा, चाहे रखे जैसा वैसा
नाम पे तेरे जीना मरना, रखा हूं तुझ पर भरोसा
जैरामदास आशा लेकर, निर्भय हुआ मतवाला ॥४॥

भजन ९० (चाल– अगर है ज्ञान को पाना)

सीधे सरल स्वभाव वाले, आज जग में ना वो चले
सच्चे को परखने वाले, जगत में आज है बिरले ॥टेक॥

उसके बल ही पर चल रही, देश की संस्कृति धर्म
उन्हीं का पुण्य प्रताप है, समाज को शांति वो मिले ॥१॥

सहते हैं कष्ट वो कितने, देखकर दुःखितों की पीडा
निशदिन घिसते रहे तन को, सभी के जीवन करने उजले ॥२॥

निष्काम कर्म का बाना, नाम का लगावें ताना
क्या जानें वो अन्जाना, मर्म भेद कैसा मिले ॥३॥

कितने नकली वेष धारी, बतावें अपनी चतुराई
छुपाकर के वो बुराई, धन बटोरने तुले ॥४॥

कब तक चलेगी पुंगी, लोफर लफंगे लोगों की
प्रभु क्यों देर करते हो, क्यों न दे शिक्षा दलीलें ॥५॥

कहें जैराम सत्य ये बानी, नैनों में भर आवें पानी
देखकर इनका रवैय्या, तन में आग ये जले ॥६॥

भजन ९१ (चाल– गुणदोष हमारे ना देखो)

तू वलवे को रे भूल करके, आशिक बन के, देख ले जलवा
उसमे ही तुझको सार मिले कोई न दिखें तुझको नया ॥टेक॥

मन की नाव वहां पर चले, इन्द्रियां घोड़े जाय गले
स्थिर होवें चित्त बुद्धि, सूर्य चन्द्रमा वहां ढलें,
ना जन तन है वहाँ पर, खुद ही का बजावे पावा ॥१॥

सूरत मूरत का नहीं ठिकाना, आप ही सुनें आप ही गावें
नूरपती को वहां अजमाया, बेगम दशा मे मिल जावें
रैन नहीं और दिन नहीं, अन्धियारा में प्रकाश हुआ ॥२॥

मुरदे ने मुरदे को खाया, मरकर भी वो जिन्दा भया
जिन्दे को मरा दिख पायें, लडका कहें बुढा बन जायें
तरुण कहें लीला दिखलायें, खूब बना है नूरजहां ॥३॥

पाये दिवाने इस पद को, खेल खेलें हद अनहद में
जैराम कहे अपने धुन में, रंगे रहते हैं अपनें में
रंग रेखाके वतन में, क्या बखानूं रे अचम्भा ॥४॥

भजन ९२ (चाल : मैली चादर ओढ के कैसे)

हे शारदे, वादे निभा दे, कीजिए पूर्ण मुरादें,
सकल गुण की तुम हो दात्री, चरण कमल रज दे दे ॥टेक॥

कर मे पुस्तक वीणा लेकर, प्रगटी वो धरती पर
ज्ञान की ज्योत जलाई माता, अन्धकार मिटाकर
अज्ञानी को ज्ञान देकर, विकार मिटायें गन्दे ॥१॥

बढ़ती जाये आसुरी वृत्ति, कहीं ना मिले शांति
अहिंसा का शस्त्र लेकर, मिटाये सब भ्रांति
खिल उठे मुरझाई कलियाँ, चहुँ ओर आनन्द नांदे ॥२॥

जनम लिए मां शुक्रवार को, भूमिभार उतारन
जैसे खिले भानु गगन में, प्रखर रश्मि कनकन
ऐसी लीला करके दिखाई, भक्त हुये सब फिदे ॥३॥

ना मांगू मैं चांदी सोना, महल अटारी खजाना
दर्शन की बस भीख देना, यही मेरी तमन्ना
जैराम कहे, विनती मेरी, प्यासे की प्यास बुझा दें ॥४॥

भजन ९३ (चाल : ये कैसा सुर मन्दिर है)

हे रूप के ये नूरपती, अस्तित्व दिखा तेरा
चारों ओर देख रहा हूँ, अन्धेरा अन्धेरा भरा ।।टेक।।
अर्जुन को दिव्य दृष्टि दी, विश्व विराट स्वरूप दिखाये
द्रोपदी की पुकार सुन के, नंगे पैर दौड़े आये
लाज बचाकर चीर पुरा के, काम किये पूरा ।।१।।
प्रल्हाद से पुछे ये पिता, कहाँ है तेरा विधाता
जिसकी तू बड़ाई करता, बता दे मुझको तू पता
उसने कहा सभी ठिकानें, जल थल नभ में भरा ।।२।।
क्या इस खम्ब में भरा है पुत्र ने हाँ हाँ बोला
पिता ने तत्काल लात मारा, खम्ब से नरसिंह अवतरा
भक्तों की वचनों में प्रभुजी बन्धे, हिरण्यकश्यप पछारा ।।३।।
ऐसे शास्त्रों की है ग्वाही, क्या झूठ हैं क्या सही
जब तक हमें प्रतीति ना होवे, कैसा मानेंगे सही
जब तुम हो दया के सागर, फजीती में क्यों डारा ।।४।।
जब तुम हो अन्तर्यामी, दर्शन दे दो मुझको स्वामी
भ्रम भ्रम में भटका फिरूँ, क्या है हममें वो कमी
जैराम कहें भेद मिटें तब देखूं स्वरूप सितारा ।।५।।

भजन ९४ (चाल : लाल मुंजे मोरी प्रत)

बाबा अपनी, आंखें खोल जरा रे
कौन है तेरा, सोच जरा, भूलते चला,
भरा अज्ञान अन्धेरा, जीवन खो रहा सारा
घूम रहा मारा मारा ।।टेक।।

सच्चे को तो, झूठे बनावे, झूठे से तो प्रीति लगावें,
कैसा रवैय्या है मूरख ये तेरा ॥१॥

एक एक श्वास है, मूल्यवान भाई
गया समय फिर, आयेगा नहीं,
संत ये तुझको हरदम करें इशारा ॥२॥

पलघड़ी का ठिकाना न तेरा, इच्छा वादा रहें अधूरा
स्वप्न में देखें, राज पाट फकीरा ॥३॥

किसलिए मैं यहाँ आया हूँ, क्या करके हमें कहाँ जाना है
इतना ना समझा तो, दुनियां में झकमारा ॥४॥

कहे जैरामदास अब तो भी जाग
संतो का संग धरके, उदय कर ले भाग्य
मेरी बात को, मत मान तू बुरा ॥५॥

भजन ९५ (चाल : लाल मुंजे मोरी पत)

दास की विनती, सुन लो हे गुरुनाथ,
वो साईनाथ, सुन लो बात, अनाथों के तात
पतित पावन तुम हो, दुखियों के रक्षक तुम हो
बनाते बिगडी तुम हो ॥टेक॥

तुम बिन हमारा ना जीवन सुखी, कहीं पर ना
शांति मिले मन होवें दुःखी
तड़प तड़प जिया मचले ये दिन रात ॥१॥

चलती के सब संगी साथी, बिगडे के ना होवे संगाती
मतलब की करें हमेशा वो बात ॥२॥

मंजधार में नैया अड़ी है उबारन वाला कोई नहीं हैं
बैंया बढाकर मिटाओ, झंझट उत्पात ॥३॥

अब ये ठोकरें सहा नहीं जायें, धीरज दिल में थोड़ी ना रहें,
नैनों से धारा, जाये बहुत नितनित ॥४॥

कसोटी मेरी बहुत हुई है,
कैसे बैठे हो अन्त देखते हुये
जैराम कहें दर्शन बिन, समय ये जात ॥५॥

भजन ९६ (चाल : कही मानों भारत)

कही मानों भारत वासिन्दो,
अब छोडो झूठें सपने ॥
अब दिन नहीं है बैठने के, सुधारो भाग्य अपनें ॥टेक॥

दिन आगे हैं परीक्षा के, सत्य कसोटी पर चढ़ने के
जो चलेगा इमानदारी से, अमर कीर्ति रहेगी जग में ॥१॥

कालाबाजार, घुसखोरी, कुचला जायेगा व्यभिचारी
चलेंगे ना छल कपटियों के, अब ये झूठे बहाने ॥२॥

जल थल नभ तेज वायु, अधिकार सबको समान भाइयों
करते हो आपस में लड़ाई, क्यों हिचकते भू देंने ॥३॥

बांट खाओ तुम, सब मिल करके, आपस में बन्धुभाव रख के
वो ही सच्चा सपूत कहलावे, धर्मात्मा उसको गिने ॥४॥

जैरामदास कहे, अज्ञानता छोड़ो
मानवता का, नाता जोड़ो
इसमें भलाई है सबकी, कहना था वो कह दिया ॥५॥

भजन ९७ (चाल : बेर भई प्रभु क्यो ना आये)

भोर भई प्रभु गुण ना गायें
ऐसे मनुज हमें ना भायें ।।टेक।।
मनुज तन मिला, भजन करन को
परमात्मा की झांकी देखन को,
पशु समान ये जीवन बितायें ।।१।।
फंसते जायें, माया उलझन में
चित्त ना लागे सच्चे हितों में,
मन काम काम ओर धायें ।।२।।
ना अपने को जिसने चीन्हा
कहाँ पर है, मेरा ठिकाना,
शांति कैसी मिल पायें ।।३।।
दुविधा में पड़ा बिचारा,
काम नाम ये रहा अधूरा,
अंतकाल में यह पछतायें ।।४।।
जैरामदास कहें, ऐसे नर का
ठिकाना नहीं, घर का घाट का,
मुफ्त में उमर गमायें ।।५।।

भजन ९८ (चाल : तेरी चमड़े की पुतली)

मनवा रे करत रहो, भजन श्रीराम का
नहीं भरोसा, इस तन काया का ।।टेक।।
जोरू लडका, कुटुम्ब परिवार, सब स्वारथ के साथी
बिपत पड़ी पर कोई न होवें, दूर रहे ये जाया ।।१।।

जैसा करेगा वैसा पायेगा, फल ये करनी का
बीज जैसा बोया वैसा, उसने ही पाया ॥२॥
मृगजल तृष्णासा है प्यासा, घूमते फिरें चहूं दिशा
लेकर के ये झूठी आशा, अंत में पछताया ॥३॥
राम नाम बिन कोई ना साथी, तेरा यहाँ जगत में
निकल जायेगा हंसा तेरा, रह जायेगी माया ॥४॥
कहता जैराम सतसंगत में, मिले यें फलचार
बीती को तो बिसार भाई, ऐसा मानुस जनम नहीं पाये ॥५॥

भजन ९९ (चाल : अगर है ज्ञान को पाना)

हमें क्या दुनियां से नाता, एक परमात्मा है भाता ॥टेक॥
उसी पर छोडा हूँ भार, जीवन का मिलनें ये सार
कोई कितना भी बुरा करें, उसकी ना है मुझे चिंता ॥१॥
मुख मोडा हूँ माया से, प्रीत जोडा हूँ संतों से
उसी में उमर बिताना है, वो ही मेरे हैं विधाता ॥२॥
न धनवानों से है, गरज, न विद्वानों से मेरी अरज
प्रेम हैं सभी आत्माओं से, रस्म में हूँ ये निभाता ॥३॥
कहें जैराम चलती है, दुरंगी नीति दुनिया में
सत्यता पर जीना मरना, ये ही मुझको है सुहाता ॥४॥

भजन १०० (चाल : ऐसा है नाम तेरा)

मन में शंका कुशंका, उठें मायावी लाटें
धैर्य नहीं हैं दिल में, रहते पड़े भ्रमना में ॥टेक॥
हित करें, नित्य उनका, विश्वास नहीं सज्जन का
हरदम वो देवें धोखा, जुटा रहें माया में ॥१॥

महत्व का काम अपना, उसका ही गावें गाना
दूजें का कुछ भी होना, आयें ना वो समझ में ।।२।।
फिकर इन्हे पेट की, राह ना देखें स्वहित की
भूल भुलैय्या में फिरते, खोते उमर इसी में ।।३।।
कहें जैराम दास हित, अनहित को ना परखें
आंखें होकर के भी अन्धें, भू भार हुये पृथ्वी में ।।४।।

भजन १०१ (चाल : मेरे मन की गंगा)

दुर्जन से करो बन्धन, सज्जन से करो वंदन
इसी में ही सार मिलेगा, जीवन में भाई ।।टेक।।
कोई भी हो अपना पराया, गुण दोष परखते चलो
हित अनहित की बात सुनकर, वैसा तुम उनसे बोलो
भरत अपनो जननी तजें, बिभीषन तजें भाई ।।१।।
भूलो मत तुम, जाति पाति में, तथ्य नहीं है कुछ उसमें
जिसमें कोई सार मिले, चलो उसी ही राहों में
निरखते चलो सत्यता को, उसमें है भलाई ।।२।।
देह धर्म क्षण भंगुर है, जीव ब्रह्म अविनासी
जब तक समझें ना, स्वधर्म को, तब तक फेरी चौऱ्यासी
जब तक काया, तब तक माया, रख लो आतम साक्षी ।।३।।
धरम की ये बात करें ये, मरम उसी का नहीं जानें
अपने ही हरदम लगाये तानें, कर्म ना अपने पहिचाने
थोथी बात में क्या धरा, ले लों संतों की ग्वाही ।।४।।
जैराम दास कहें भूले है, सब ये पंथ बाजी में
कैसी कृपा होगी संतों की, चले ना उनके राहों में
बून्द को नहीं परखा जिसने, सारी उमर गमाई ।।५।।

भजन १०२ (चाल : हम घर बासी सन्यासी)

फूट होवे जिसके घर में,
काल नाचे उसके सर पे हो ।।टेक।।
सज्जन कितना भी उसे समझावें
उसके बात पर ध्यान ना देवें
उल्टा क्रोध में ही वो तपें ।।१।।
काम क्रोध, वहाँ मंडरायें,
किसकी बात, उसे ना भाये
अशान्ति वहाँ पर छाये ।।२।।
घर लागे मसान, सरीखा
भूत पिशाच वहाँ नित रमता
प्रतिबन्ध ना उनके जुबां पे हों ।।३।।
कितना भी करें वो कमाई
बन्धु प्रेम की जुड़े ना मिताई
कलह वहाँ पे नित्य व्यापे ।।४।।
जैरामदास, कहें फूट में ही
कौरव नाश हुये हैं भाई
पांडव विजयी हुये थे सत् में ।।५।।

भजन १०३ (चाल : कौन छुयेगा परछाई रे)

झुकेंगे ना अन्याय से चाहे
कितना भी बड़ा हो धन से २ सुनो रे भाई
सतनाम की जय जय बोलो, सतनाम की जय २ बोलो ।।टेक।।
सत पे जीना, सत पे मरना प्रण है हमारा सत पथ चलना
चाहे कितनी मुसीबत आये डरना नहीं काल से ।।१।।

० समाप्त ०